नै धाड़ैए

बाल उपन्यास

नै धाड़ैए

बाल उपन्यास

जगदीश प्रसाद मण्डल

श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN :

दाम : १०० रू. मात्र

पहिल संस्करण : २०१३

गाम-पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी

मिथिला, बिहार

पिन- ८४७४१०

मोबाइल- ९९३१६५४७४२

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.

दूरभाष- (०११) २५८८६६५६-५७ फैक्स- (०११) २५८८६६५८

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Typeset by Sh. Umesh Mandal

Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.- 09572450405, 09931654742

NAI DHARAIYA : A Maithili novel by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकँ
समरपित...



परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

जीविकोपार्जन- कृषि।

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल "बाल साहित्य विदेह सम्मान" २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन

संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३)

विहनि कथा संग्रह : (१) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३), (२) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह) (२०१० पहिल संस्करण, २०१३ दोसर संस्करण)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३)

१

मैट्रीक परीक्षासँ तीन मास पूब कोठरीमे बैस राधामोहन अपन दिन-दुनियाँक सम्बन्धमे सोचैत रहए। ओना परीक्षाक तैयारी लेल बैस पढ़ैत रहए मुदा किछु समए पछाति जखनि पढैसँ मन उचटि गेलै तखनि जिनगीक बात उठलै। परीक्षाक फारम भरला पछाति स्कूल आएब-जाएब बन्न भऽ गेल छेलै। रंग-रंगक विचार मनमे उठए लगलै मुदा बर्खा-पानिक बुलबुला जकाँ विचार उठै आ फूटि जाइ। कोनो असथिर विचार ने मनमे उठै आ ने अँटकैत रहै। कोनो विचारकेँ ने ठीकसँ पकड़ि पबैत आ ने सोचि पबैत। किछु समए पछाति असथिर कऽ अपन भूत-भविसपर नजरि अँटका गौर करए लगल तँ तीन तरहक विचार अभरलै। ओ ई जे अखनि धरि साले-साल स्कूल परीक्षा स्कूलेमे होइतो रहल आ आगूओ बढ़ैत गेलै। मुदा आब तँ से नै हएत। सरकारी देखा-रेखमे परीक्षो हएत आ रिजल्टो निकलत। जँ फेल करब तँ दोहरा कऽ फेर अगिला साल परीक्षा दिअए पड़त आ जँ पास करब तँ आगू...? आगू तँ पढ़ि नै पएब। जँ पढ़ि नै पएब तखान की करब?

साधारण चारि बीघा जमीनबला परिवारक राधामोहन। चारि बीघा माने अस्सी कट्ठा। अस्सी कट्ठा माने सोलह सए धूर। दुनियाँ मानचित्रमे भिन्न-भिन्न देश आ भिन्न-भिन्न जमीनक महत। जँ जापानक बेस किमती तँ साइबेरियाक से नै। मुदा मनुख तँ दुनूठाम अछिए आ रहबे करत। खैर जे होउ, ने जापानक चर्च भऽ रहल अछि आ ने साइबेरियाक। चर्च तँ मिथिलांचलक भऽ रहल अछि तँए मिथिलांचलक जमीन देखए पड़त। सबहक जिनगीओ सभ रंगक।

पैंतालीस बर्ख अबिते-अबिते राधामोहनक पिता नन्दलाल पूर्ण रोगी बनि चुकल छला। तीन बर्ख पूर्व धड़िक जिनगी जखनि नन्दलालक मनमे आबनि तँ अपनो नै बिसवास होन्हि जे हमहूँ जोड़ा बरदबला किसान छेलौं, आ मस्तीक किसानी जिनगी बितबै छेलौं जइ साल सुभ्यस्त समए होइ छेलै तइ साल जेहने घरक कोठी भरै छल तेहने पोखरिक महारपर नारक टाल लगबै छेलौं। मुदा आब ओहन दिन-दुनियाँ थोड़े देखब।

अछैते खेते थोड़े हएत। करबो के करत, जखनि केनिहारे नै तखनि हएत केना। दुनियाँक माटि-पानि तँ सभ दिनसँ रहलै आ सभ दिन रहत। मुदा जइ समए जेहेन मनुख रहत तइ समए दुनियाँक रंगो-रूप तँ ओहने रहत किने।

जाधरि नन्दलालक शरीरमे रोगक आगमन नै भेल छेलनि तइसँ पूर्व दुनू परानी अपन खेत-पथारमे, कहियो गरदामे तँ कहियो थालमे लेटाइत रहै छला। काजक एहेन सूत्र बनल छेलनि जे आगू-पाछू सोचै-विचारैक बात मनमे उठबे ने करनि। ओना साले-साल बरहम स्थानक भागवतमे कातिक मास सुनै छला जे जिनगी क्षणभंगुर छी, तँए समैकेँ बिना गमौने समरपित भऽ किछु कऽ ली, मुदा से भागवते धरि मन रहै छेलनि। भरि पेट भोजन भेटिए जाइ छेलनि तँए ने घटवी बाट मनमे उठै छेलनि आ ने दुआर-दरबज्जा भरल देखै छला जइसँ बढ़ती बात उठै छेलनि। भागवतोकेँ धार्मस्थानक धर्मक बात बूझि घर्मस्थानमे सुनि लइ छला। गामपर अबिते घरक चक्कीमे जुइट जाइ छला। अपन खेत, अपने केनिहार तँए अपना मनोनुकूल खेती-गिरहस्ती करै छला। जइ वस्तुक जेते जरुरति अछि, पहिने ओते पुरा लेब तखने ने अनका दिस तकबै। जँ से नै ताकब तँ आँखिक खच्चरपन्नीसँ अनके सभ किछु देखैत रहब आ अपन देखबे ने करब।

नन्दलालक विशाल रूप जहिना बुधनी देखैत तहिना बुधनीक विशाल रूप नन्दलाल देखैत। कोठरीक राधा-रानीक जिनगी नै विशाल दुनियाँक मंचपर नट-नटी बनि दुनू-परानी कखनो खेतक गोला कोदारिसँ फोड़ैत, तँ कखनो संग मिलि धान रोपैत। कखनो माल-जालक थइर-गोबर करैत, तँ कखनो इच्छानुसार खाइ-पीऐक ओरियान करैत। जिनगीक लीला तँए लजाइ-धकाइक प्रश्ने नै।

तीन सालक बीच नन्दलाल तेना-रोगा गेला जे मन मानि लेलकनि जे आब नै जीब। चल-चलौक बाटपर आबि गेलौं। मुदा एते दिन तँ अही समाजमे समाज बनि जिनगी गुदस केलौं, नै किछु अनकर केलिऐ, तँ केकरो भारो तँ नै बनलिऐ। मेहक बड़द जकाँ किसानक संग खेत-पथारमे बहबे केलिऐ। तैबीच ठेहुनक गीरह कचकि उठलनि। कचकि एतेक जोरसँ उठलनि जे बूझि पड़लनि सौंसे देहक बुत्ताकेँ छिन्न-भिन्न कऽ

देत। मुदा ई तँ भेल देहक रोग, मनकेँ तइसँ कोन मतलब। ओकर तँ अपन सभ किछु छै। मुदा शरीरक दर्दक पीड़ाक कष्ट तँ प्रभावित कइए देने रहै। पीड़ाएल मन, शरीरक बेथा देखि हाँइ-हाँइ अपन बोरिया-विस्तर समेटैत बुद-बुदाएल-

> ''जखनि दुनियाँ छोड़िए रहल छी तखनि किए ने अंतिम बात कहिए दिऐ जे, भाय जे केलिअ से खेलिअ, किछु जमा तँ रहल नै जे देने जेबह। एकरा गल्ती बूझि छोड़ि दाए आकि जवाबदेही बूझि दोरिका छाप दऽ दाए।''

नन्दलाल ऐठाम पंडाक बगे बनौने एक गोटे एला। बम्बैया सम्पन्न मंचक कलाकार जकाँ बनल-ठनल चेहरा रहनि। नन्दलालक दरबज्जापर अबिते कामरूप कामाख्याक शंख फूकि घरवारीकेँ सूचना देलखिन।

दरबज्जापर आएल अभ्यागतक आगमन बूझि वाड़ीसँ नन्दलाल आ आँगनसँ बुधनी पंडाजीक आगूमे उपस्थित भेलथि। देव रूप देखि नन्दलाल ओसारक चौकीकेँ देह परहक तौनीसँ झाड़ि-पोछि बैसैक आग्रह केलखिन। दरबज्जापर आएल अभ्यागतक सेवा करब किसानी संस्कारक मुख्य अंग अदौसँ रहल अछि।

बैसिते पंडाजी जोगी-फकीर जकाँ अपने बड़बड़ाए लगला-

> ''ऐ जमीनक भाग कहै छै जे साक्षात लछमीक बास छी, जे दोबर-चारिबर गतिए परिवार आगू मुहेँ बढ़त, मुदा?''

लछमीक बास सुनि दुनू परानी नन्दलालक मनमे खुशीक ज्वार उठलनि। मुदा एकभग्गू बोल पंडाजीक रहनि। ओ ई जे जेते प्रशंसा बुधनीक केने रहथिन तेते नन्दलालक नै। जइसँ नन्दलालक मनमे किछु अनोन-विसनोन जरूर भेलनि, मुदा पत्नीओ तँ आन नहियेँ छथि, विचारकेँ दबलनि। पंडाजी हाथक रेखा देखबाक विचार व्यक्त केलनि। हाथक रेखा सुनि दुनू परानी अपन-अपन हाथ आगू बढ़ौलनि। चलाक खेलाड़ी जकाँ, जे पहिने दोसरकेँ खेलबैत पछाति सवारी कसैत तहिना पंडाजी सेहो केलनि। हाथ देखबैसँ पहिने बुधनीक मनमे उठलनि जे जौं पतिक अछैत मृत्यु भऽ जाइत तँ ओ पत्नी...? मुदा परोछ भेने...? पत्नीक मन पतिपर एकाग्र भऽ गेलनि। शुभ समाचार सुनैले बुधनी बिहुँसैत पंडाजीक

आगू हाथ पसारि कहलखिन-

> ''ई हमर पति छथि, जाबे जीबै छथि ताबे हमहूँ जीबै छी, तँए जौं केतौ कोनो गड़बड़ होइ से कहि दिअ। समए अछैत ओकर प्रतिकार करब।''

बुधनीक बात सुनि पंडाजीक मन चपचपा गेलनि। गोटी सुतरैत देखि, चौकीक निच्चा लटकल पएरकँ समेटि पल्था मारि ऊपर बैसला। बुधनीक हाथ देखि खुजल आँखि बन्न करैत ठोर पटपटबैत पंडाजी बुदबुदेला। फेर आँखि खोलि चारू दिशा दिस देखि ऊपर तकलनि। जेना कियो किछु बजैक उत्साहित केलकनि। बजला-

> ''परिवारक पछुलका गति तँ नीक छल मुदा बीचमे ग्रहक आगमनसँ गड़बड़ा गेल अछि। ओना अखनि धरि तेहेन गड़बड़ नै भेल अछि, जे बूझि पड़त मुदा आगू जखनि जुआ जाएत तखनि बुझबै की देखबो करबै। ओना ऐ घरक साक्षात लछमी अहीं छिऐ, जैपर अखनो घर ठाढ़ अछि, मुद...?''

आगूमे बैसल नन्दलालक मनमे उठैत जे परिवारक गार्जन हम छी, जौं हमर हस्त-रेखा नीक रहत तँ अनकर अधलो भेने की हेतै। फेर लगले विचार बदलए लगलनि जे पत्नीओ तँ अर्द्धांगिनीए होइ छथि तँए हुनको छोड़ब नीक नहियेँ हएत। पत्नीकँ कहलखिन-

> ''पहिने पंडाजी कें चाह पिअबियनु। पछाति सभ गप हेतै।''

पतिक बात सुनि बुधनी चाह बनबए गेली। तैबीच पंडाजी नन्दलालकँ पुछलखिन-

> ''ऐ गाममे देवस्थान केते अछि?''

पंडाजीक प्रश्न नन्दलाल नीक जकाँ नै बूझि सकला। दोहरबैत पुछलखिन-

> ''की देवस्थान?''

नन्दलालकँ अनाड़ी बूझि पंडाजी बजला-

“बरहम स्थान तँ हेबे करत। तेकर बादो महावीरजी, शिवजी, धर्मराज इत्यादि-इत्यादि आरो केते स्थान हएत किने?”

नन्दलाल-

“हँ, से तँ अछिए। तीनटा महादेव मंदिर अछि, दूटा महावीरजी स्थान अछि, एकटा धर्मराज, एकटा सलहेस, एकटा ठकुरवाड़ी सेहो अछि।”

तही बीच बुधनी चाह नेने आबि पंडाजीकेँ आ नन्दलालोकेँ देलखिन एक घोंट चाह पीविते पंडाजी बजला-

“चाह तँ चाहे अछि। बड़ सुन्नर चाह पिएलौं।”

चाह पीब हाथ धोय पंडाजी नन्दलालक दहिना हाथ देखि बजला-

“अहाँकेँ तीनटा बिआह आ सातटा सन्तान लिखैए। काएम बिआह छी?”

तीनटा बिआह सुनि बुधनीक मनमे जलनि उठलनि। मुदा किछु बजली नै। नन्दलाल कहलखिन-

पहिल जे बिआह भेल सएह छी। सन्तानो एकेटा बेटा अछि।”

पाशा पलटैत देखि पंडाजी पुनः हाथक रेखापर अपन आंगुर दैत बजला-

“ई रेखा ऐठामसँ आबि, एकरा काटि देलक। जइसँ दूटा पत्नीओ कटि गेल आ छहटा सन्तानो।”

पुनः नन्दलालक हाथ छोड़ि बुधनीक हाथ देखए लगला। बुधनीक हाथक रेखा देखैत बजला-

“पति सुख अहाँकेँ पूर भऽ रहल अछि। किछु दिन आरो अछि। मुदा...?”

पंडाजीक बात सुनि नन्दलालक मनमे उठलनि, भरिसक ई मौगियाहा पंडा छी। मुदा, खएर अखनि तँ दरबज्जापर छथि किछु बाजब उचित नै हएत।

पंडाजी आगू बजला-

“अहाँ पतिकँ शनिक ग्रहक आगमन भऽ गेल छन्हि, जे अहूँक रेखा इशारा करैए।”

बुधनीक हाथ छोड़ि पुनः नन्दलालक हाथ देखैत बजला-

“अहाँकँ शनिक ग्रहक आगमन भऽ गेल अछि। अखनि तँ शुरूआतीक अवस्थामे अछि तँए किछु नै बूझि पड़ैए मुदा तीन मास बीतैत-बीतैत उपद्रव शुरू हएत।”

पतिक ग्रह सुनि बुधनी ओहिना तड़पली जहिना कोनो स्त्री अपन निर्दोष पतिकँ सिपाही हाथे जहल जाइत देखैए। तरसैत-तलपैत बुधनी पंडाजीकँ कहलखिन-

“अपने साक्षात देवता छिऐ। जे चाहबै से हेतै। कोनो धड़ानी हिनका ग्रहसँ छुटकारा करा दियनु।”

गोटी लाल होइत देखि पंडाजी बजला-

“केहेन-केहेन राहू-केतुकँ तँ जिनगीमे भगा चुकल छी आ ई कोन माल-मे-माल अछि। एकरा तँ छन-पलकमे केतए-सँ-केतए दऽ आएब तेकर ठीक नै।”

पंडाजीक बात सुनि दुनू परानी बुधनी-नन्दलालकँ जान-मे-जान आएल। बुधनी बाजलि-

“खर्च-बर्चक चिन्ता नै, मुदा काज पक्का होय।”

घूसक मोट रकम देखि जहिना घूसखोरक मन चपचपा जाइत तहिना पंडा जीक भेलनि। बजला-

“देखियौ, ऐ काज लेल अनुष्ठान करए पड़ै छैक तँए सभठाम करब आकि कराएब संभव नै अछि।”

बुधनी-

“तखनि?”

पंडाजी-

“तइले चिन्ता किए करै छी। हाकिमक दसखत जेहने ऑफिसमे तेहने डेरापर। तखनि तँ ऑफिसमे अनचोकमे आबि कियो देखि ने लिअए तेकर कनी..., जे डेरामे नै होइत अछि।”

नन्दलाल-

“नै बुझलौं अहाँक बात पंडाजी।”

कबुला छागर जकाँ नन्दलालक मन कँपैत। तँए आँखिक सोझमे अपन अनुष्ठान देखए चाहैत।

पंडाजी-

“देखियौ, हिमालयसँ लऽ कऽ समुद्र धरिक वस्तुक जरूरति अनुष्ठानमे पड़ै छै। ओते लऽ कऽ चलब संभव अछि? ऐठाम सभ वस्तु उपलब्ध नै हएत। अहाँ सन-सन केते भक्त ने छथि। हमरा लिए तँ सभ बरबरि।”

नन्दलाल-

“तखनि?”

पंडाजी-

“विधिवत सभ खर्चक मूल्य दऽ दियौ। जहिना अनन्त पावनि माने अनन्तक पूजामे एक गोटे पूजा करै छथि आ टोल-पड़ोसक लोक अपन-अपन अनन्द-फनन्दक पूजा करा लइ छथि, तँए की ओ अशुद्ध भेल। अशुद्ध तँ होइत अछि फनन्द जेकर गीरह-बनहनक गिनती कम होइ छै।”

हिमालयसँ लऽ कऽ समुद्र धरिक बात सुनि बुधनीक मन चकभौर काटए लगलनि। बाप रे, केतए हिमालय अछि आ केतए समुद्र। तइसँ नीक जे जे कहता सएह करब असान हएत। देववाणी कोनो कि नूनछड़ाह होइ छै, उनटा होउ कि सुनटा, कहुना हेतै तैयो तँ मधुरे-मधुर हेतै किने। बाजलि-

“केना की खर्च-बर्च पड़त?”

पंडाजी-

“खर्च-बर्च की हाथी-घोड़ाक पड़त, तखनि तँ अनुष्ठाने छी कनीओ-कनीओ कऽ करब तैयो तँ...।”

कनीओ-कनीओ सुनि बुधनी बाजलि-

“नै पान तँ पानक डंटीओसँ काज चला लिअ।”

पंडाजी आ बुधनी दुनू गोरेक बात सुनि नन्दलाल परीक्षा लेल कबुलाक छागड़ जकाँ थर-थर कँपैत। मुदा एक दिस जिनगी तँ दोसर दिस मृत्यु सेहो देखैत। ग्रह-नक्षत्रक किरदानीकेँ की मनुख रोकि सकैए, फेर मनमे उठैत जे, जे मनुख माटिओकेँ देवता बना सकैए ओ तँ किछु कऽ सकैए। मुदा दुनू गोटेक अनुकूल विचार सुनि चुपे रहला।

हुन्डे अनुष्ठानक खर्ख लऽ पंडाजी सगुनियाँ डेग दैत विदा भेला। मनमे ईहो बात उठैत जे जौं चारिओ-पाँच एहेन सुतरल तँ साल-माल लगिए जाएत। मुदा जे होउ, यात्रा नीक रहल।

तीन मास बित गेल। ने पंडाजी अपन परीक्षाक रिजल्ट बुझए घूमि कऽ एला आ ने दुनू परानी नन्दलालकेँ मनमे कोनो तरहक आशंका भेलनि जे पंडाजी की केलनि की नै। तीन मास पछाति जइ दिन शनिक ग्रहक आगमनक नाओं कहने रहनि ओ दिन नन्दलालकेँ मने रहनि। सौनक पूर्णिमाक दिन। पूर्णिमा मन पड़िते महिनाक हिसाब जोड़लनि तँ जोड़ा गेलनि जे आइए पूर्णिमा छी। हौआइत हाथकेँ कुड़ियबैत मनमे उठिते, पोखरिक माछ सदृश मनमे चाल देलकनि। ओह, भरिसक हाथ हौआएब शुरू भऽ गेल। बामा हाथक हौआएब छोड़ि दहिना हाथसँ तरबा कुरियौलनि तँ सुआस पड़लनि। ओह, जाबे ग्रहक आगमन नै भेल, ताबे पएर-हाथक कुड़ियौनी किए मंगैए। पत्नीकेँ कहलखिन-

“राधामोहनक माए, भरिसक ग्रहक आगमन भऽ गेल।”

ग्रहक आगमन सुनि बुधनीक मनमे उठलनि जे बहुत रोगी ओहनो होइए जे रोगकेँ देहमे रखनौं रहैए आ दबाइओ खाइत रहैए। काजो करिते

रहैए। मुदा रोगीकेँ ओछाइन धड़ा आराम देब सेहो तँ होइए। तहूमे सर्दी-बोखार नै छी जे नूनपनियाँ पीब लेब आ भानसो-भात करब। देवलोकक ग्रहक आगमन छी, ऐ श्रेणीक रोग..., कहुना भेल तँ राजे रोग भेल किने।

नन्दलाल बजला-

"हाथो हौआइए आ पएरो, तखनि चलब केना आ काज केना करब। दुनू दिससँ तँ रोग आबिए गेल अछि।"

बजिते बुधनीक मनमे उठलनि, पथ-परहेज की सभ करए पड़त। सर्दी-बोखारक तँ बुझल अछि जे पोड़ो साग नै खाएत मुदा एहेन रोगसँ तँ पहिले-पहिल भेँट भेल। खौँझाइत बड़बड़ेली-

"जे भगवान सभकेँ बुधि देलखिन ओ एक-रंग करि कऽ किए ने देलखिन जे रोगमे पड़ल छी आ पथ-परहेज बुझले ने अछि। एहेन रोगीसँ की लोक हाथ धोइ लिअ।"

"हाथ धोइ लिअ।"

मुहसँ निकलिते चमकैत शीशा जकाँ मन चनकि उठलनि। जौँ रोगीसँ हाथ धोइ लेब तँ माथक सिनूरक की हएत। असोथकित जकाँ बुधनी थकमका गेली। जइ जिनगीकेँ खेल बुझै छी ओ खेल नै छी जौँ खेल रहैत तँ अमेरिकासँ केते ऊपर रहितौँ।

ओछाइन पकड़िते नन्दलाल रोगाए लगला। श्रम नै केने अरुचि, पड़ल रहने देहक अकड़नसँ जोड़-जोड़क दर्द बढ़ैत-बढ़ैत छह मास पुरैत-पुरैत नन्दलाल भिनसुरका नटुआ जकाँ मोटरी माथपर नेने चल-चलाउ बनि गेला।

असगरे बुधनी काजमे तेना ओझरा गेली जे काजे मानव काजे दानव बनि गेली। काज तेते छिड़िया गेलनि जे जहिना उड़ैत फनिगाकेँ गिरगिट पकड़ै छै तहिना भऽ गेलनि। काजे काजकेँ खेबो करैत आ गीरबो करैत। साँझू पहर जखनि काजसँ निचेन भऽ पएर मोड़थि आ भरि दिनक काजक हिसाब मनमे अबनि तँ मानि लथि जे सभटा कर्मक खेल छी। कियो खेल खेलि खेलाड़ी बनि जाइत तँ कियो खेल बनि खेलाएल

जाइत। डाक्टर ऐठाम जखनि पतिकेँ लऽ जाइ छियनि तँ सभ रोगक जड़ि भरि दिन पड़ल रहब छन्हि। जइसँ सौंसे देहक जोड़ पकड़ि लेलकनि। फेर जिनगी ठाढ़ हेतनि एकर कोन भरोस। तखनि तँ माएओ-बापक लिलसा पूरा कइए देलियनि जे एकक नाति दोसराक पोता बना ठाढ़ कइए देलियनि, की पतिधर्मंमे कमी रहल? जौं नै तँ पति-विहिन नारीकेँ समाज किए कलंकित केने छथि।

पतिपर सँ बुधनीक नजरि उतरि बेटा-राधामोहनपर एलनि। लोकक धिया-पुता शहर-बजारमे जा रहबो करैए, सिनेमो देखैए आ पढ़बो करैए। से गरदनिकट्टी हमरा सेने सेहो भेलै। मुदा हमहीं की करबै जइ घरमे एकटा विद्यार्थी आ एकटा रोगी रहत ओइ परिवारक गाड़ी खिंचब महिला लेल सचमुच चुनौती अछि। किस्सा-पिहानी ढेरो कहै छिऐ, मुदा पतिव्रता परिवार लेल केहेन समरपित छेलथि, ऐ दिस सेहो देखक चाही। ई नै जे टीक एक बोझ रखनै छी आ पनरह-पनरह दिनक बिनु धुअल पेन्ट पहिर प्रवचन करै छी।

राधामोहनपर नजरि पड़िते वेचारी विस्मित भऽ गेली। भगवान सभटा विपति ओही छौड़ाकेँ देलखिन। मुदा ओकरा तँ कहुना कऽ गोठ-गो धरि बनेलौं अछि। आब कि ओ धीगर-पुतगर नै भेल। जँ धीगर-पुतगर भेल ओकरा बुते घर चलौल नै हेतै। बुधनीक मनमे सवुर भेलनि। भगवान पति हरने जा रहल छथि मुदा जुआन बेटा तँ सोझमे अछिए। फेर मन उनटि राधामोहनपर एलनि, जेतबो सुख माए-बापक घर केलिऐ तेतबो उमेर तक हम कहाँ दऽ सकलिऐ। ओही वेचाराकेँ धन्यवाद दी जे खेने-बिनु-खेने पढ़बो करैए आ संग-साथ दऽ काजो करैए। संग साथ मनमे उठिते बुधनी विह्वल भऽ गेली। संगे-साथ ने सभ किछु छी। मनुख तँ अबैत-जाइत रहत मुदा परिवार जे संग-साथ अछि वएह ने जिनगी छी।

❍❍

२

देखले दिनमे नन्दलालक परिवार केतए-सँ-केतए पाछू ससरि गेल, यएह छी जिनगी। समए आगू मुहेँ ससरैत आ जिनगी पाछू मुहेँ, तखनि समए संग केना चलब। समाजक बीच नन्दलाल परिवारक चर्च अहू रूपमे होइत। प्रश्न उठैत जे समाजक केते लोकक बीच एहेन विचार उठैए। परीक्षामे एक शब्दक भूलसँ प्रश्नोत्तर गलत भऽ जाइत जेकर परिणाम होइत असफल। मुदा ओहए एक शब्द भेटने परीक्षार्थी सफलो तँ होइते अछि। की तहिना जिनगीओक शूत्र शब्द अछि।

ओना समाज तँ समाज छी, अथाह समुद्र कहियौ आकि सघन बोन। कियो नून घोड़ि नून-पनियाँ बना रोग भगबैए तँ कियो नूनाएल पानिकेँ नूनगरी हटा स्वच्छ बना पीबा जोग बनबैए। कियो दुर्गंधकेँ सुगंधक आड़ि दऽ लक्ष्मणा रेखा खींच जीवन-यात्रा करैए। तँ कियो नरकोमे ढाही मारि-मारि आरो गर्त दिस बढ़ैए।

समाजमे एहनो कम लोक बजनिहार नै जे बुधनीक दशा-दिशा देखि चाबस्सीओ दैत आ हँसबो करैत। मुदा केहेन चाबस्सी आ केहेन हँसी। खुशीसँ जौं हँसी अबैत तँ केकरो दीन-दशापर किए अबैत। मुदा तैसंग समाजमे एहनो कहनिहार तँ अछिए जे कहैए जे धन्यवाद ओही वेचारीकेँ दियनि जे एक संग पतिसँ पुत्र धरिक सेवा अपना बाँहु-बलसँ कऽ रहल छथि। एक परिवारक खेती-पथारीसँ लऽ कऽ पढ़ाइ-लिखाइ, बर-बेमारीक सामना असगरे करैत, की हुनका जिनगीक चक्की उनटौनिहार नै कहबनि। जे मिथिलांचलक गौरव-गाथाक इतिहास रहल अछि। मुदा तैसंग ईहो कम दुर्भाग्यक बात नै जे जिनगीकेँ सामाजिक जालमे ओझरा अपन करम-भागकेँ दोषी बनबैत। एहनो कहनिहारक कमी नै जे कहैत पीसलक मडुआ तँ उठौत गहुमक चिक्कस। प्रश्न उठैत जे बुधनीक की दोख जे एहेन शब्दसँ वेचारीकेँ दागल जाइत? मुदा एहनो शब्द तँ ओही समाजमे फड़ैत-फुलाइत अछि जे कहैत वेचारी बुधनीक अखनि उमेरे केते भेल अछि। अधोसँ कम जिनगी टपल हएत, बेसी बाँकीए हेतै। ई केहेन निसाफ भगवानक भेलनि जे सौंसे जिनगी नै दऽ अधोसँ कमेपर अधसुखू बना देलखिन। पति-पत्नीक बीच जे रहैए तेकर तँ ओ गति छैक जेकरा

मनुखक श्रेणीसँ निच्चा बूझल जाइ छै आ जेकरा नै छैक ओकर गति की हएत? कियो राँड़ कहि राँड़िन बनौत तँ कियो यात्राक भदवा कहि दुतकारत। ओना एहेन गति अखनि धरि बुधनीकेँ नै भेल छेलनि, कारण जे रोगाएलो छेलनि तँ पति जीबै छेलनि। भलहिं परिवारक गाड़ीक जुआ असगरे किए ने खिंचैत होथि। मुदा जहिना समाजक बीच, मकानक इटा जकाँ एक-एक परिवारक ऊपर समाजक भारो रहैत आ जीवैक आजादीओ रहैत तहिना परिवारक बीच एक-एक व्यक्तिक सेहो होइत अछि। शरीर अलग-अलग रहनौं, पानिक बीच जेहेन सम्बन्ध रहैत, से तँ रहिते अछि। मुदा बुधनी तँ जालमे ओझराएल छथि। दस बजे जे बेटा स्कूल जाइ छन्हि ओ चारि-पाँच बजे अपराहनमे घूमि कऽ घरपर अबै छन्हि, तैबीच रोगाएल पतिकेँ छोड़ि बुधनीकेँ केतौ बाहर जाएब उचित हएत? मुदा बाधो-बोन नै जाएत से हेतै? तँए कि बुधनीक विचारक सागर सूखि गेलै जे एक-बोल पतिसँ नै बाजि पाबए। जँ एक दिस गाछक डारि टूटि रहल अछि तँ दोसर दिस राधामोहन सन, अनपढ़ पतिक जगह पढ़ल-लिखल बेटा तँ भेटिए रहल छै। उत्साहमे मिसिओ भरि कमी बुधनीमे नै आएल छेलनि, जहाँ धरि काजक सफलता (दिनक काज) पछाति जे मन खुशिआइन तँ अनेरे बमकए लगनि। सौंसे गामक लोक बताह भऽ गेल, बाप बेटाकेँ दोखी बना भरि दिन गरियबैत रहैए तँ बेटा बापकेँ गरियबैत रहैए, साला बुढ़ाड़ीमे घी ढारी करैए। सासु-पुतोहुकेँ दोख दैत जे अवढंगहीं घर आएल, तँ पुतोहु बापकेँ गरियबैत जे कोन नटिनियाँ घरमे बोड़ि देलक। मुदा अनेरे अनकर गाछी देखने की फेदा कियो तेतरिक बोन लगौने अछि तँ कियो बगुरक, केकरो गाछीमे तुइन फुलाइ छै तँ केकरोमे आम। अनेरे भरि दुनियाँ बौआइक कोन काज अछि। अपन धंधाक दुखक भागी ने छी आकि अनेरो हमर माए मरल तँ अहाँ बुझबो ने केलिऐ आ अहाँक माए मरत तेकर जिगेसा करब हमर दायित्व बनल। मन ठमकि गेलनि।

जिनगीक दशा-दिशा देखि बुधनी ठकुआ गेली। जहिना धारक वेगमे कियो भँसि जान गमबैत, तँ कियो गाछपर सँ खसि जान गमबैत, कियो घरमे लगल आगि मिझबैमे जान गमबैत तँ कियो ओछाइनपर पड़ल इछानिक गंध बीच जान गमबैत, तँ कियो कन्हापर घैलिक भार उठा

फुलवारी पटबैत जान गमबैत तँ कि सभ एक्के भेल। एक नै भेनौं एक्के भेल? केना भेल? लत्ती जकाँ लतरल अछि सभ किछु समाजमे मुदा जहिना लत्तीक गिरहपर फूलो फुलाइ छै आ फड़ो फड़ै छै, जे ओइ लत्तीक फूल फल भेल। तहिना हरेक मनुखकेँ अपन-अपन जिनगीक समस्या ताधरि उठैत रहत जाधरि जिनगी जीबै छी। एहेन स्थितिमे की हएत, ओ हएत जिनगीक हर समस्याकेँ अपन तालाक कुंजी बना खोली। रहल बात जे सभ जौं सएह करत तँ मनुखक समाज केना बनत। समाज बनैक अपन सूत्र अछि जइसँ बनैए। ऐठाम प्रश्न व्यक्तिगत अछि, सभकेँ अपन-अपन बुधि-विवेक छन्हि, की नीक की अधलाक विचार तँ अपने करए पड़तनि। वएह भेला पछाति स्वतंत्र जिनगीक रस भेटैए।

बेटा राधामोहनपर नजरि गड़ा बुधनी देखए लगली। वेचाराकेँ गरदनिकट्टी करै छिऐ। अनका-अनका देखै छिऐ बड़का-बड़का शहर-बजारक स्कूलमे बेटाकेँ पढ़बैए आ...? मुदा हमरा सन लोककेँ संभव अछि। जैठामक शिक्षा गलत दिशा पकड़ि झकझोड़ि रहल अछि तैठाम की कएल जाए, ई तँ नान्हिटा प्रश्न नै अछि। मुदा ओही वेचाराकेँ धन्यवाद दिऐ जे खेने-बिनु-खेने स्कूल नै छोड़ैए। बेटाक धर्म-कर्म देखि बुधनीक मन तड़पल। आब छौड़ा गोठ-गो भऽ गेल। भगवान एते रच्छ रखलनि जे आब जे अपनो (पति) मरबो करता तँ एकटा खुट्टा देने जेता। मुदा जइ वेचाराकेँ बच्चेमे माए-बाप छोड़ि दैत, भगवान ओइ बच्चाकेँ केना ठाढ़ करै छथिन। सभ की ठाढ़े भऽ जाइए। किछु ठाढ़ो होइए आ किछु नहियोँ होइए। आगू आब राधामोहनकेँ नै पढ़ा पएब। तखनि तँ जौं अपने अपन पढ़ैक भार उठा लिअए तँ रोकबो नै करबै। यएह ने जे नै पढ़त तँ काजमे मददि करत, पढ़त तँ से नै हएत। नै हएत तँ नै हएत, जँए एते दुख कटै छी तँ किछु दिन आरो काटब।

मेघक तरेगन जहिना अपन-अपन जगहसँ टक लगौने देखैत रहैए तहिना राधामोहन जिनगीक बाट दिस देखए चाहैत मुदा बेँतक बोन जकाँ तेते-ओझरी लगल देखैत जे अन्हार छोड़ि इजोत भेटबे ने करै। मुदा मूल प्रश्न तँ मनमे उठिए जाय। तीन मास पछाति परीक्षा हएत, तेकर पछाति? की आजुक जे शिक्षा-पद्धति बनि रहल अछि तइमे आगू बढ़ि पएब। स्कूल लगमे अछि, गामेपर सँ जाइ-अबै छी। मुदा घरसँ बाहर भऽ शहर-

बजारक खर्च जुटा पएब। जौं से नै तँ मैट्रिक पासकेँ के पुछै छै, आँफिसो आ करखन्नोक चौकीदारी बी.ए, एम.ए. करै छै। काँच मन राधामोहनक पिघलए लगलै। बाप-माएक दशा देखि मन बेकाबू भऽ गेलै। तीन मास जइ आशा (परीक्षाक आशा) मे बैसल रहब से अनेरे। जेते पढ़ने छी तेतबेकेँ ने घोकैत रहब। किछु करक चाही। मुदा केतए करक चाही? शहर-बजार जा नोकरी करी आकि परिवारक संग गाममे किछु करी। जौं शहर-बजार जाएब तँ माता-पिताकेँ के देखिनिहार हएत। सभकेँ अपने अछि। तखनि? तखनि तँ दुइएटा उपाइ अछि जे या तँ परिवारकेँ सुधारि माने परिवारक काजकेँ सुधारि कऽ चली आकि परिवारकेँ तोड़ि कऽ। विचारमे राधामोहनकेँ डुमल देखि बुधनी बजली-

> ''बौआ, अखनि खुट्टा बनि ठाढ़ छिअ, तूँ चिन्ता किए करै छह?''

आशु-तोष दैत बुधनी राधामोहनकेँ कहलनि। मुदा मनमे अपन खुशी ई रहनि जे जौं पति मरिए जेता तैयो एकटा खुट्टा तँ गारनहि जेता। मुदा मनमे ईहो उठैत जे किछु अछि तैयो पुरुख कहुना पुरुखे भेल, मौगी कहुना मौगीए भेल। मुदा तेसरो तँ होइते अछि जे पुरुखो मैगियाह होइए आ मौगीओ पुरुखाह। हँ से तँ होइते अछि।

माएक बोल-भरोससँ राधामोहनक मनमे किछु आशा जरूर जगल मुदा जेतेक जरूरति छल तेते नै जगल। ठमकैत मनमे उठलै, गामेमे देखै छी जे पनरह-सोलह बर्खबला सभकेँ केरा-पौंच जकाँ पौंच निकलै निकलए लगै छै। तखनि हमहीं की जुआन नै भेलौं। मनुख बाँस थोड़े छी जे समैए पाबि कोंपर देत। माए-बापक सेवा बेटा-बेटीक पुनीत कर्तव्य छी। पुनीते काज ने धर्म छी। पानिक टघार जकाँ राधामोहनक मनक विचार आगू मुहेँ ससरल। की हमरे भरोसे दुनू गोटे बैसल रहता। तहूमे पिताक एहेन स्थिति छन्हि जे सालक कोन बात जे महिना-दिन गनि रहला अछि। परीक्षा देने एतबे ने हएत जे मैट्रिक पासक सर्टिफिकेट भेट जाएत। सर्टिफिकेट लऽ कऽ की धोइ-धोइ चाटब। सर्टिफिकेटक जरूरति ओकरा होइ छै जे नोकरी करए चाहैए। जिनगी लेल तँ ज्ञान चाही। माने काजक लूरि।

तत्-मत् करैत राधामोहनक मनमे उठल, परिवारमे जौं किछु करए चाहै छी तँ हुनको (माता-पिता) सबहक विचार सुनि लेब नीक हएत। जौं एहेन काज होइ जेकर जड़ि हुनका सबहक जिनगीमे रोपा गेल होइ, मुदा कोनो कारणवश ओ सूखि गेल होय। ई तँ नै जे बाधक एक-गच्छा जकाँ कोनो एहेन काज करए लगी जे जेते हवा-विहारि, ठनका-पाथर आकि झाँट-पानि हेतै, सभटा ऊपरे खसत। ठमकिते मनमे उठलै जखने इच्छाकेँ अनुभवसँ भेँट होइ छै तखनि जे बाट भेटै छै ओ जिनगीमे बेसी नीक होइ छै। से नै तँ दुनू गोटेक बीच अपन विचार राखब। हुनका सबहक की विचार होइ छन्हि सेहो तँ सोझहा आबिए जाएत। संगे माए-बाबूक मनमे सेहो हेतनि जे बेटा आज्ञाकारी अछि, एहनो दशामे बिना पुछने, आगू डेग नै बढ़बए चहैए। अपनाकेँ पुछै जोगर जिनगी बना लेब, सफलताक मुख्य सोपान छी। रावणक दरबारमे हनुमानक आसन नमहर (ऊँच) हेबाक कारण भरिसक सएह रहै। माता-पितासँ पुछि लेब राधामोहन जरूरी नै अनिवार्य बुझलक। अनिवार्यक कारणे छाप मनमे पड़ैत रहै। ओ ई जे किछु-ने-किछु जिनगीक सच्चाइ जरूर भेटत। मालीक श्रम सिरिफ ओतबे नै होइत जेते गाछ फूल दैत। बल्कि ओहो होइत जे गाछ फुलाइसँ पहिने कोनो कारणे सूखि गेल होइ। प्रश्न उठैत जे की ओइ गाछकेँ ठाढ़ करैमे बिआसँ गाछ बनबैमे ओकर श्रम नै लगलैक। श्रमक उचित श्रमिक श्रम केनिहारकेँ जखनि भेटै छै तखनि मनमे खुशीक अंकुर उठै छै अपन कर्मक फल भेटल। राधामोहनक मनमे एकटा नव प्रश्न उठि गेल। ओ ई जे दुनू गोटे (माता-पिता) सँ फुट-फुट विचार करब नीक हएत कि एकठाम। नीक-अधला जे हुअए मुदा एकटा तँ हेबे करत जे काजक गवाह एक गोटे हेबे करता। जाधरि काजक जानकारी दोसरकेँ नै रहत ताधरि काजक महतमे कमी-बेसी रहबे करत।

गोसाँइ डूमि गेल, मुदा अन्हार नै भेल छल। बाहरक सभ काज सम्हारि बुधनी गठुलासँ जारनि आनि चुल्हि लग रखली। रतुका भानस करैक ओरियानमे जुटैक सुर-सार करए लगली। तैबीच दिनक काजक हिसाबपर मन गेलनि। कोन काज सभ छेलै आ कोन-कोन भेल। ओसारेपर बैस हिसाब जोड़ैक विचार केलनि। नन्दलाल ओछाइनेपर सँ देखैत जे जखनि भानसक ओरियान भैए रहल अछि तखनि रातिओ ठीके-

ठाक रहत। भगवानकेँ मने-मन गोर लागि कहलखिन-

> “भगवान, जहिना राति अराम करैले बनेलौं मुदा जौं खाइक ओरियान भेल रहए, तखनि ठीके बनेलौं। मुदा अहींसँ पुछै छी जे बिनु पाइक सरलाहीओ वेश्या केकरो पुछै छै।”

नीन तँ नीने छी, खाउ-पीबू निनियाँ देवीक पूजा करू। मुदा की ओहो भुखाएल पेटकेँ पुछै आकि छोड़ि कऽ पड़ा जाइ छै। खएर जेतए जे होउ, मरितो-मरितो तँ सुख भोगाइए जाएत। अनुकूल समए देखि राधामोहन माए लग आबि पुछलक-

> “माए, किछु करैक मन होइए। घरक जे दशा देखि रहल छी, ओ निच्चाँ दिस ढड़कि रहल अछि। आइ करी-कि-काल्हि करी करए तँ हमरे पड़त। तइसँ नीक जे बँचल समैकेँ हाथसँ नै जाए दी।”

बेटाक बात सुनि जहिना बुधनीक मनमे आशाक बीआ खसल तहिना नन्दलालक मनमे। मुदा लगले नन्दलालक मन विसाइन हुअ लगलनि। ओह, वेचाराकेँ जखनि पढ़ैक बेर एलै, भगवान हाथ-पएर तोड़ि घरमे बैसा देलनि। जौं अनके जकाँ हमहू पढ़ा सकितिऐ तँ कि राधामोहन बड़का लोक (डाक्टर-इंजीनियर) नै बनैत, की ओ इटाक बड़का घर बना रहैक ओरियान नै करैत। एते तँ दोखी बेटा लग छीहे। मुदा से केना? जौं निरोग रहितौं तखनि जे काजसँ देह चोरबितौं तखनि ने, से तँ अपना नै मन अछि जे जानि कऽ कहियो काजसँ देह चोरौने हेबै। मुदा तैयो ओकरे दुनू माए-बेटाकेँ धैनवाद दिऐ जे तीन सालसँ ओछाइन धेने छी आ सभ नेकरम करैए। भगवान अहीले ने परिवार दइ छथिन जे असगरे लोक अपन जिनगी जानवर जकाँ नै जीब सकैए। जौं से होइ आ असगरे कियो हुअए आ ओकर माए मरि जाइ तँ असगरे वेचारा की करत। काज तँ तीन गोटेक छै। एक गोटे बजारसँ कफनक कपड़ा आनत, दोसर गोरे जरबैक ओरियान करत तँ तेसर गोटे कनबो करत किने।

राधामोहनक प्रश्न सुनि नन्दलालो ओछाइनेपर उठि कऽ बैसैत बजला-

''बौआ, आब की तोहू कोनो नान्हिटा बच्चा थोड़े छह जे नै किछु कएल हेतह। तूँ तँ कहुना चफलगरो भऽ गेलह, जे चरि-चरि पँच-पँच बर्खक बेदरा सभ गाए-महिसक चरवाहि करैए। ओते पैघ जानवरक चरवाहि करैबला रहै छै। मैट्रिक पास करैमे तोरा कोनो भांगठ छह, मरिओ जाएब तँ तोरा माइएकँ चावस्सी दी जे कहुना-कहुना परिवारकँ ठाढ़ केने रहलह। आब तहूँ जुआन भेलह। नहियाँ कहुना तँ केतेको विषयक बात पढ़नहि हेबह। आइ एते संतोष अवस्से मनमे भेल अछि जे मरितो काल पुछै जोगर रहलौं आ बेटाकँ अगिला जिनगीक बाट हम नै घेड़बै। बेटा धन छी, एतेटा दुनियाँमे जिनगी नै बितौल हेतै।''

नन्दलालक विचारसँ राधामोहनक मन फरीच नै भेल जे बाबू की कहलनि। मुदा दोहरा कऽ पूछब, घेथारब हएत। एक तँ ओहन रोगसँ (दर्द) पीड़ित छथि तैपर बेसी बजबियनि से नीक नै। मुदा अपना जनैत प्रश्नक उत्तर तँ दइए देलनि। भलहिं बुझैमे नै आएल। बुझैमे नै आएल, ई कमजोरी केकर भेल? बजनिहारक आकि सुनिनिहारक। एते बात राधामोहनक मनमे अबिते नव-पुरानक बीचक दूरीपर नजरि गेल। नव केकरा कहबै आ पुरान केकरा कहबै वा पुरान की भेल? देखै छी जे किशोरी बाबाक गाछी तीन-चारि पुस्त पहिलुका लगौल छियनि। गाछीक आड़ापर जे शीशोक गाछ लगौलनि, माटि भलहिं ढहि कऽ सहीट किए ने बनि गेल, मुदा एक-दोसराक गाछक दाम तीस-हजार, चालिस हजार होइ छै। से की कोनो शीशोए टाक अछि आकि आमो गाछ सभ एहेन-एहेन अजोधो भऽ गेल अछि आ फड़बो एते करैए जे परिवारमे अपुछ बनौने रहैए। मुदा तैयो तँ एकटा प्रश्न उठबे करत जे तैबीच (गाछीक जिनगी) की गाछक डारि नै सुखलै आकि शीशोक पड़िया नै भेलै। जरूर भेलै। अकासक चिड़ै सभ सेहो बाँझीक लस्सा लोलमे लगौने आबि-आबि डारिपर बैसी लोल रगड़ि लस्सा लगा बाँझीओक गाछ रोपिते रहल। आइओ ओ गाछी ओहिना लहलहाइत अछि, जहिना शुरुक जुआनीमे लहलहाइ छल। भलहिं गहुमन साँपक लहलही नै होइ पनियाँ दरादक तँ अछिए। मुदा ओकर भय कहाँ केकरो होइ छै, होइ छै गाम-घरक गहुमक। जे जमीन आम शीशोक कोन बात जे चन्दन सन वस्तु दैत रहल अछि, तेकरा

छोड़ि जौं कियो मरूभूमिमे बसि खुशी मनबै छथि ओ भलहिं देहक मना लथि मनसँ नै मना सकै छथि।

किशोरी बाबापर सँ राधामोहनक नजरि अपना परिवारपर उतरल। खेत सभ समुचित करै दुआरे परती भेल जाइए। परतीओ की कोनो एके रंगक अछि। केतौ उपजैक शक्ति क्षीण अछि तँ केतौ शक्तिक अभाव बनौल जाइए। बिनु पानिएक खेत केते दिन अपन सेवा दऽ सकत। रौद-जाड़सँ तपैत कहुना अपन अस्तित्व बना रखने अछि। मुदा मूल प्रश्न ऐठाम अछि जे जइ समैमे हम सभ जीब रहल छी, समयानुसार कृषि केना औद्योगिक कृषि बनत, मूल प्रश्न ई अछि।

अंकुरक रूपमे राधामोहनक विचार जे जे पूजी अछि ओइमे पशुपालन करी। मुदा पशुओ तँ केते रंगक अछि। हाथीओ अछि बकरीओ अछि। हाथी तँ उत्पादित (दूध) छी वा नै, तहिना घोड़ो अछि। तँए दुनू सवारी बनि गेल। जैठाम पेटक समस्या अछि ओ थोड़े ऐसँ चलत? महिस भेल तँ ओ मरदा-मरदी भेल। अखनो गाम-घरमे तीन-तीन दिन लोक वौआए-वौआए बाह (पाल) कराबैए। तइसँ नीक गाए। जे किछु थोड़-थाड़ विकास भेल ओइमे गाएक पाल सेहो समायानुकूल भेल अछि। तेतबे नै जौं गाए-महिस पोसब तँ ओकर चाराक (भोजन) ओरियान सेहो करए पड़त। जे सबहक साधक बात नै अछि। जइ जोगर जिनका छन्हि ओ ओइ जोगर काज सम्हारि सकै छथि। तँए भीतरे-भीतर राधामोहन ऐ भाँजमे जे जौं घासक लूरि माएकेँ हएत तँ एते तँ उपकारे भेल।

तैबीच बुधनी आ नन्दलालक बीच कहा-कही हुअ लगल। खिसिआ कऽ बुधनी पति नन्दलालकेँ कहि देलखिन-

> ''बड़ बुधियार छेलौं तँ ओ पंडावा केना रूपैऔ ठकि लेलक आ देहमे रोगो पैसा देकल?''

बुधनीक बात नन्लालकेँ लगलनि नै। पत्नीक गुरु स्वरूपा रूप सोझहा पड़लनि। तीन सालक कष्ट नन्दलालकेँ जिनगीक बहुत अनुभव करा देने छेलनि। अनुभव ईहो करा देने छेलनि जे अखनि उमेरे की भेल। लोक सए-सए बर्ख जीबैए हम अधोसँ कमेमे जा रहल छी। जइ

स्त्री आ बेटाक सेवा हम करितिऐ से दिन-राति हमरे पाछू हरान रहैए। जे हमरा पाछू हरान रहत ओ अपना लेल की करत आकि सोचत। सबहक जिनगी हम तोड़ि देने छिऐ। जइ चलैत परिवारक गाड़ी पाछू मुहेँ ढरकि रहल अछि। अपन हारि कबूल करैत नन्दलाल पत्नीकेँ कहलखिन-

''राधामोहनक माए, अहाँ ठीके कहलौं जे पंडावा ठकि लेलक। दोख तँ हमरे भेल। पुरुख भऽ कऽ घरक खुट्टा तँ हमहीं भेलिऐ। मुदा एहेन ठकेनिहार हमहीं टा छी आकि आरो लोक छै। परिवारमे एते गल्ती जरूर भेल अछि मुदा...।''

पिता मुँहक इमानदारीक बोल राधामोहनक हृदैकेँ हिलोरि देलक। बच्चा मन सूप जकाँ फटकि तँ नै पेलक मुदा हिलोरमे सबहक (नीक-अधलाक) सीमा जरूर बना देलक। बाजल-

''माए, हम तँ स्कूले धेने छी, बाबू बेमारे छथि, तैबीच तूँ केते दिन बगियाक बग्गी बना दौगा पेमे।''

बेटाक बात सुनि बुधनी लजवीजी जकाँ आँखि मूनि विह्वल होइत बजली-

''बौआ, कोनो की लिखए-पढ़ए अबैए जे लिखि-लिखि रखितौं। मुदा एते मन जरूर गवाही दइए जे जे बनि पौलक से करैत रहलौ। नीक-अधला तँ उपरबलाक छी।''

माएक विचारकेँ पकड़ि राधामोहन लत्ती जकाँ ऊपर मुहेँ उठए चहैत मुदा एहेन कोनो-गीड़्ह की अखुँए ने पकड़ि पबैत जैठाम सँ सोंगर पकड़ैत। नजरि उठा देखैत तँ समुद्र जकाँ झलकैत सभ किछु देखैत मुदा नहेबाक गर केतौ भेटबे ने करैत। गुरुक आगू जहिना शिष्य सिर-सिरा जानैक प्रश्न पुछैत तहिना राधामोहन पुछलखिन-

''माए, किछुओ तँ फरिछा कऽ कह?''

राधामोहनक प्रश्नक कारक अपन रहै मुदा बुधनी अपना कारके बूझि बाजलि-

''बौआ अनकर घर-दुआर छी जे बाजब, अपन छी, अपन केलौं,

> तइले तोरा सभकेँ उपराग देब नीक हएत? अपन पति, बेटा, समाज, देश-दुनियाँ सभ किछु तँ अपने छी तखनि कि कियो ऐसँ अलग भऽ करैए जे दोसराकेँ कहत। जइ करैले धरतीपर एलौं, जहाँ धरि सक लगल तहाँ धरि करै छी। नीक-अधला देखिनिहार कियो आरो छथि, तखनि कि करबह।''

माएक बात सुनि राधामोहनक मनमे उठल, ओह गड़बड़ भऽ गेल। तेहेन लार-झाड़मे पड़ि गेलौं जे अपन बाटे बटिया गेल। भरिओ दिन जौं बाट तकैत रहब तैयो ऐ डगरमे थोड़े डगहरि सकब। से नै तँ ठिकिया कऽ वएह प्रश्न राखी जैठाम बौआइतो बटोही किछु-ने-किछु समैले अँटकैए। बाजल-

> ''माए, अखनि दुनू गोटे -बाबूओ आ अहूँ- वीर्तमान छी, तँए एहेन रास्ता देखा दिअ जइ पकड़ि हमहूँ ताधरि चलैत रहब जाधरि ओइसँ नीक आ सक्कत रस्ता नै भेट जाएत। आँखिक सोझमे यज्ञक संकल्प सबहक माए-बापक इच्छा रहैत तँए...?''

राधामोहनक प्रश्न जहिना पिता-नन्दलाल-केँ तहिना माए-बुधनी-केँ आरो भँसिया देलकनि। नन्दलालक मनमे उठैत जे जौं बेटा उठि जिनगी उठबए चहैए, तइमे हम कहाँ छुटि जाइ छी, जे बापक सेवा नै करत, किछु करैक मन होइ छै, किछु माने की? सभ किछु आकि किछु नै। मुदा किछु विचार जौं बेटाकेँ नै देव, सेहो हीक लगले मरब। मनक बात कहि दइ छिऐ। बाजल-

> ''बौआ, दुनियाँमे कियो ने अपना लेल करैए आ ने अनका ले, हथियार बनि धरतीपर आएल अछि, ओकर उपयोग केते के केलक ओकरे लेखा-जोखा धर्मराजक घर होइ छै। कियो धर्मराजक घर बास करैए कियो यमराजक। बेटा बनि धरतीपर जनम लेलह तँए केना कहबह मरदक बेटा मुदा एते तँ कहबे करबह जे मरद बनि मरदक बेटा कहबैत रही।''

पिताक बात राधामोहनक मनकेँ ओहेन बना देलक जेहेन बकरीक काँच दूधमे साहोरक दूध देला पछाति लगले दही बनि जाइत। मने-मन

राधामोहन चौकन्ना होइत चारू दिस ताकए लगल। गुमा-गुमी देखि बुधनी अगुताइत बाजलि-

> "बौआ, भानसक अबेर भऽ जाएत। तहूमे पथ-पानिक ओरियान तँ अपना सभसँ फुट करए पड़ैए। केना बापकँ पटुआ-झोर पथमे दियनि। तखनि तोड़े बड़ जिद लगल छह तँ माए भऽ कऽ की कहबह। यएह ने हाथ-पएर भगवान दुरुस देने रहथुन जे दनदनाइत आगू मुहँ दौगैत जेबह।"

कहि झपटल उठि भानस करए चुल्हि दिस बढ़ली।

❍❍

३

रातिक पौने नअ बजैत। गामक शिवालयोक आ ठकुरवाड़ीओक साँझुक शंख आ डमरूओ बाजि गेल। जारनि नीक रहने बुधनीक भानसो आन दिनसँ किछु पहिने भऽ गेलनि। मुदा तँए कि गामक देवालयक धूप-आरतीसँ पहिने लोक खाए केना लैत? आ जौं खाइए लेत तँ कि भऽ जाएत। ऐ विचारमे चुल्हिए लग बैस खोरनाक जराएल मुँह दिससँ चुल्हिए आगू लिखए लगली। लिखल-पढ़ल तँ बुधनीकेँ नै होइत मुदा सभ दिनक आरतीक स्तुति सुनि पढ़ै-गुणैक लूरि तँ भइए गेल छेलनि। कियो अपन अक्षर चित्रे खिंच बनौत तइसँ अनका की। तैबीच ठकुरवाड़ीक स्तुति शुरु भेल-

"भए प्रगट किरपाला दीन दयाला...।"

ओना बुधनी सभ दिन स्तुति सुनैत, मुदा खोरना हाथमे रहने चुल्हिए आगू लिखौ लगली। स्तुति केतौ बतियाइत, बुधनीक कान केतौ सुनैत आ हाथक खोरनी केतौ चलैत। एक बाट नै रहितो धारक धारा जकाँ अपना-अपनीकेँ सभ दौगैत। स्तुति समाप्त होइते जना बिजलीबला इंजन बिजली लाइन कटने जे जेतए गेल रहल ओ ओतै रुकि जाइत तहिना बुधनीक भेल। दुनू हाथो-कानो अपने रुकि गेल। रुकिते मन औनाए लगलनि। मुदा आगूमे भानसक बर्तनआ खाइक समए तँए मन परिवारे दिस समटा कऽ घेरा गेलनि। मन पड़लनि राधामोहनक प्रश्न। ओह, वेचाराकेँ कहाँ किछु उत्तर देलिऐ। कहुना तँ माए-बाप अखनि हमहीं ने छिऐ, सोझहे असिरवाद देने थोड़े होइ छै आ असीरवादी सेहो दिअ पड़ै छै। अपसोच करैत मन ठमकलनि। ठमकिते उठलनि जे नै किछु विलगा कऽ कहलिऐ तँ मनाहियोँ तँ नहियेँ किछु केलिऐ। एतबे कालमे भूमकमो तँ नहियेँ भऽ गेल जे उनटन भऽ गेल। की भेलै, खाइए काल बौआकेँ बुझा-बुझा कहबै।

नअ बजिते बुधनी पतिकेँ भोजन करौलनि। पछाति बुधनी अपनो आ राधामोहनो खाइले बैसल। मुँहक अन्न मुहँमे बुधनीकेँ घुरियाइते रहनि की मनमे अपन जिनगी मन पड़लनि। केतए जनम भेल, माए-बाप ऐठाम

केते दिन रहलौं, पछाति दुनू गोरे नव लोककेँ पति बना हाथ पकड़ा देलनि। पतिक संग जिनगी भरिक शर्त्त छल, से भगवान कलछप्पन केलनि। जे अखनि देखैबला छला तिनके तेना कऽ मचोड़ि देलकनि जे देखनिहारकेँ स्वयं देखिनिहारक आशा भऽ गेलनि। मुदा तँए कि दाम्पत्य जीवन नै रहल। माएओ-बाप आ साउसो-ससुरक इच्छा तँ पुराइए देलियनि। आब कि राधामोहन बच्चा अछि। ओ कि घरक मोटरी उठा नै चलि सकैए। जहिना पतिक आशा तहिना ने बेटोक। बाजलि-

> ''बौआ, तखनि केना पुरुखक सोझ अपन विचार कहितिअ। कहुना भेला तँ स्वामीए भेला किने। जाबे आँखि तकै छथि ताबे आँखि उठाएब नीक हएत। तँए तखनि किछु ने कहलिअ।''

जिज्ञासा भरल माएक बात सुनि राधामोहन चित्त असथिर करैत बाजल-

> ''कोन बात माए, बिसरि गेलौं।''

मुँह-कान चमका जहिना माए बच्चाकेँ चमकब सिखबैए तहिना बुधनी मुँह चमकबैत बाजलि-

> ''तोहूँ बाले-बोध जकाँ बुधिबिसरू छह। आब धीगर-पुतगर होइमे बाँकी छह।''

बिनु नाविकक नाव जहिना झीलमे हवा संग अपने झिलहोरि खेलाइत तहिना बुधनीक मन सेहो खेलए लगलनि। विस्मित होइत माएकेँ देखि राधामोहन बाजल-

> ''माए, तेते ने कहै छेँ जे एकोटा मन रहत। सभटा बिसरैएबला कहै छेँ। कोन बात तखुनका कहए लगलेँ से ने कह?''

राधामोहनक प्रश्न सुनि बुधनी बाजलि-

> ''बौआ, तखनि जे कहने छेलह जे किछु करैक मन होइए। से करैसँ मनाही करबह। बड़ करबह तँ अपन कएल सुना देबह।''

माएक बातमे राधामोहनकेँ आशाक अंकुरक संभावना बूझि पड़ल।

पियासल बटोही जकाँ माएक आगू राधामोहन चुपचाप भऽ गेल।

बुधनी बाजलि-

''बौआ, जुग-जमाना तेहेन आबि गेल जे...?''

कहि बुधनी चुप भऽ गेली। माएक बात सुनिते राधामोहनक मनमे उठल जे फेर दोसर बात भरिसक मन पड़ि गेलनि। ओना नै हएत, अपन कएल काजक बड़ाइ सभकेँ नीक लगै छै, तँए प्रश्नकेँ सोझरा कऽ राखब नीक हएत। बाजल-

''माए, एहेन कोनो काज कह जे खुशी मनसँ कएल हौ?''

राधामोहनक प्रश्न सुनि बुधनी ठकुएली। ठोर पटपटेली-

''केकरा खुशीक कहब आ केकरा नै कहब। एके काज केकरो लिए खुशीक होइत केकरो लिए नाखुशीक होइत। भानस करैक लूरि माए सिखौलक केना अधला भेल। मुदा ओकर जरुरति तँ बेटीकेँ होइ छै, राधामोहन तँ बेटा छी। भाए-बाबू गाए पोसै छला। गिरहत तँ नमहर नहियेँ छला मुदा सूर्यवंशी दिलीपक बाट जरूर पकड़ने छला। गाए तँ देशीए पोसै छला मुदा जेहने गाएक रंग-रूप तेहने दूधो छेलै। बजैत-बजैत जेना भक खुजलनि। मुँह खोलि बजली-

''बौआ, तहू जमानामे बाबूक खुट्टापर तेहन-तेहने गाए रहै छेलनि, जेहने-जेहने अखनो छन्हि।''

कहि बुधनी चुप भऽ गेली। जेना किछु मन पड़लनि। मुदा तूक नै बैसिने ठमकि गेली। बुधनीकेँ चुप देखि राधामोहन बाजल-

''माए, गाएकेँ की सभ करै छेलही?''

अपन काजक चर्च सुनि बुधनीक वृत्ति चित्त जगलनि। जहिना कोठीक निच्चाँ मुहेँ खुजिते अन भुभुआए लगै छै तहिना बुधनीक जिनगीक मुँह खुजिते भुभुएली-

''बौआ, माए-बापक घर बड़ सुख केलिऐ, जेतबो उमेर धरि सुख

केलिऐ तेतबो तोरा कहाँ देल भेल। तखनि तँ अनेर गाएक धरम रखबार। माइए-बापक धर्मे अखनो ठाढ़ छी।''

बुधनीकेँ फेर धारमे भँसिआइत देखि राधामोहन जालक जौड़ फेक बाजल-

''माए, सएह ने पुछै छियौ जे माए-बाप कोन धरम देलखुन जे अखनो ठाढ़ छेँ?''

अपनाकेँ हिलोरैत बुधनी बजली-

''बौआ, बिआह होइसँ पहिने माए संग भानसो-भात सिखलौं, खेतीओ-पथारीक काज सिखबो केलौं आ करबो करै छेलौं। माल-जालक घास-भूसा सेहो करै छेलौं। ऐठाम तँ ओ काजे बिसरि गेलौं।''

राधामोहन-

''ऐठाम (नैहर-सँ-सासुर) की सभ सीखलीही?''

राधामोहनक प्रश्न सुनि बुधनी लजाए लगली। मनमे उठए लगलनि जे केना बेटाकेँ कहब जे बौआ स्त्रीगणो भऽ कऽ कोदारि पाड़ब, धान रोपब एतइ सीखलौं। की कहत? ओना, करैत तँ देखबे करैए मुदा नैहरसँ सासुरकेँ केना दुसि देब। कहुना भेल तँ (नैहर) पराए घर भेल किने।

माएकेँ तत्-मत् करैत देखि राधामोहन पुछलक-

''माए, गाइयक की सभ करै छेलँह?''

बुधनी-

''माए संगे घासो अनै छेलिऐ, कुट्टीओ कटै छेलिऐ। गोबर-हटौनाइ, थइर खड़रनाइ, खेनाइ-पीनाइ देनाइ सभ करै छेलिऐ।''

राधामोहन-

''गाएकेँ दुहबो करै छेलही।''

दुहब सुनि बुधनी चमकि बाजलि-

"से कि भाए-बाप नै छलए जे दुहितौ। केतए-कहाँ सुनै छी जे पंजाबमे मौगीओ गाए दुहैए।"

राधामोहन-

"जखनि गाए पोसैक लूरि तोरा छौ, तखनि खुट्टापर गाए कहियो कहाँ देखलियौ। नाना-नानी नइ देने छेलखुन?"

राधामोहनक प्रश्न सुनि बुधनीक मन नाचि उठल। आइ जौं खुट्टापर गाए रहैत तँ यएह दिन-दुनियाँ रहैत। भगवानकेँ मन्जूर नै भेलनि। जेहो छल सेहो हेरि लेलनि। बाजलि-

"बौआ, बिआहमे तेहेन गाए बाप-माए देलक जे ओकरा जरहकेँ सम्हारि नै पबितौं, मुदा दैवक डाँग लागि गेल।"

राधामोहन-

"की दैवक डाँग लगलौ?"

बुधनी-

"पहिलोठ गाए, बच्छा-तरे बाबू देने रहथि। जाबे लगैत रहल दूध-दही परिवारमे चलैत रहल, मुदा दोसर बेर जखनि गाए उठल तखनि तेहेन खुनियाँ साँढ़क भाँजमे पड़ि गेल जे गाइयक टाङ टूटि गेल।"

राधामोहन-

"जखनि टांग टुटि गेलौ तँ ओकरा डाक्टरसँ नै देखौलही?"

बुधनी- बौआ, लोक सभ कहलक जे बलियारिमे एकटा लत्ती होइ छै, उ आनि कऽ बान्हि दियौ। छुटि जेतइ। सएह केलौं मुदा नै सम्हरल गाए। खुट्टे उसरि गेल।"

राधामोहन-

"माए, मन होइए जे गाइए पोसितौं?"

विस्मित होइत बुधनी-

"बौआ, अपना परिवारमे गाए कहाँ धाड़ैए।"

राधामोहन-

"माए, फेर दोहरा कऽ गाए नै भेलौ?"

औगता कऽ बुधनी बाजलि-

"बौआ, जइ काजमे खौटक लगि गेल से केना करितौं?"

औगता कऽ बाजि तँ गेली, मुदा मनमे उठलनि जे दोहरा कऽ करबो तँ नै केलौं। करबो केना करितौं? सोझहा-सोझही दुनू तरहक विचार मनमे दुनू दिससँ ठाढ़ भऽ गेलनि। बीचमे ठाढ़ बुधनी छटपटाए लगली। बुधनीक छटपटाइत नजरि देखि राधामोहन प्रश्नकेँ मोड़ैत बाजल-

"एके बेर एहेन विचार किए भेलौ जे खटुका लगि गेल तँ दोहरा कऽ नै पोसब। बेटा प्रश्नक निरुत्तर होइत बुधनी बाजलि-

"से कि अपने दुनू परानीक विचार भेल आ कि...?"

राधामोहन-

"की, आ कि?"

बुधनी-

"बौआ, अपना तँ देखल रहए जे नैहर अही परसादे गाममे ओहन परिवारक रूपमे अछि जे अपन परिवारक गाड़ी (भोजन, वस्त्र, आवासक संग दबाइओ-दारू आ पढ़ाइओ-लिखाइ) दनदनाइत चलैए। मौका-कुमौका दोसरोकेँ उपकार होइ छै। मुदा...। मुइला पछातिओ नै उतरल अपना चित्तसँ। मुदा अपने (पति) मुँहमारि लेलनि। एक्केठाम मनमे रोपि लेलथि जे आब नहियेँ पोसब।"

राधामोहन-

"बाबू मुँह मोड़ि लेलखुन तँ दोसर-तेसर लगबा कऽ किए ने कहबौलहुन?"

जहिना पँकाएल धारमे टपैकाल केतौ-केतौ हराएल चिक्कनि माटि भेट जाइत जइसँ किछु बिलमैक आश जगैत तहिना जोरसँ ठेलैत बुधनी बजली-

"बौआ, एक मुँहकेँ के कहए जे साएओ मुँह रोकि देलक।"

माएक स्पष्ट विचार राधामोहन नै बूझि सकल। मनमे हौंरए लगलै जे ओ सए मुँह केतएसँ आबि गेल। बाजल-

"ई नै बुझलिऐ जे सए मुँह...।"

जहिना थकान भेला पछाति नाकक संग मुहोँसँ साँस लेला उत्तर लगले थकान हटि जाइत तहिना बुधनियोँकेँ भेलनि। राधामोहनक प्रश्न समाप्तो ने भेल छेलनि तइ बिच्चेमे टप-टप बुधनीक मन चुबए लगलनि-

"बौआ, एक तँ अप्पन (पतिक) विचार रहबे करनि तैपर एकोरत्ती सह पाबि जाथि तँ आरो मन सकता जाइन। जखने मन सकताइन आकि झिझकि कऽ कहै छला जे आब गाए नै पोसब।"

राधामोहन-

"केकर सह पबै छला?"

बुधनी-

"अड़ोसिया-पड़ोसियाकेँ के कहए जे समाजोक लोक कहनि जे तोरा खुट्टापर गाए नै धाड़ै छह, अनेरे कोन फेड़मे पड़ए चाहै छह।।"

राधामोहन-

"जेकरा खुट्टापर गाए छेलै तेकरासँ नै पुछै छेलखिन। किएक तँ हुनका एहेन तीत-मीठ घटनासँ भेँटो तँ भेले हेतनि।"

बुधनी-

"से कि संगे जाइ छेलौं जे देखितिऐ। हँ एक दिनक सोझहाक

बात कहै छिअ। एकटा पंडा आएल। ओकरा जेना कियो कहि देने होइ तहिना दरबज्जापर अबिते अपने फुड़ने बाजए लगल जे ऐ डीहपर ग्रहक चढ़ाइ भऽ गेल अछि। सम्पतिक क्षय हएत। सम्पत्तिक क्षय सुनि आँखि ढबढ़बा गेल। केना जीब। जखनि पेटे ने भरत तँ भुखले केते दिन जीब। केना बाल-बच्चा हएत आ केना पतिपाल हएत? अपने तँ ढबकल आँखिक नोरकेँ, ब्लौटिन पेपरसँ सोखबो करैत रही मुदा हुनका (पति) नै सम्हार रहलनि। दहो-बहो नोर गालपर देने टघरि-टघरि निच्चाँ खसए लगलनि...।''

बजैत-बजैत बुधनीक आँखि सेहो नोरा गेलनि। बोली भरभराइत देखि खखासए लगली। राधामोहनक आँखिमे सेहो नोर आबि गेल। मुदा आँखिक अश्रुकण रहितो सुसुमाएल छल। जहिना दर्दक निवारण सुसुम पानि करैए तहिना परिवारक दर्दक निवारण राधामोहनक मनमे जगलनि। मने-मन राधामोहनकेँ संकल्प उठलै जे जीवनोपयोगी कोनो काजक जौं सर्वांगिन लूरि भऽ जाए तँ ओही काजक सम्पादन परिवारक अंग बनै छै तँए...?

राधामोहनकेँ चुप देखि बुधनी आँचरसँ आँखि पोछि बाजलि-

''बौआ, गाइयक संग पगहो गेल। पंडावा ठकिए कऽ लऽ गेल।''

बुधनीक टुटैत मन देखि राधामोहन बाजल-

''गामक लोक सभकेँ किए ने खुट्टापर गाए छन्हि?''

अपनाकेँ पुछै जोकर पाबि बुधनीक मनमे खुशी आएल। जहिना हरिमुनियाँक पुरने पटरी चैताबरक टाँहि दैत तहिना बुधनी टाँहि देलनि-

''बौआ, बड़-बड़ लीला छै। केते कहबह। एक-बेर की नै कि सरकारकेँ फुड़लै, गामे-गाम बड़का जरसी साँढ़ देलकै। सेहेन्ते लोक पाल खुआबए लगल, किछु तँ जरूर सुतरलै मुदा बेसी गाएक डाँड़े-टांग टुटलै। जइसँ उपटनियाँ लागि गेल।''

बातक रस पबैत राधामोहन बाजल-

''की कहलिही बड़-बड़ लीला...?''

बुधनी-

''सरधुआ साँढ़ तेहेन भऽ गेल जे गाए सभ बकड़ी भऽ गेल। गरीब पोसिनदारकेँ तेहेन गरदनिकट्टी भेल जे पोसनाइए छोड़ि देलक।''

❍❍

४

परीक्षाक मास दिन पहिने प्रोग्राम निकलल। ओना अखबारो सभमे रहै मुदा असल विद्यालयमे जे आएल छल ओकरे बूझि राधामोहन विद्यालय विदा भेल। सुनबामे ईहो एलै जे अंग्रेजीक तँ परीक्षा हएत मुदा पास-फेलक कोनो महत नै रहत। एक तँ परीक्षाक जिज्ञासा दोसर अंग्रेजी उठावक खुशी मनमे रहबे करै। अंग्रेजी उठावक दसो दुआरि भगवतीक आगमनसँ खुजि जाएत, अंग्रेजी सभसँ बेसी समए विद्यार्थीक खा लैत अछि। जिनगीक दशो दुआरि खुजैक मैट्रिकक परीक्षा, जइमे दसो विषयक पढ़ाइओ होइत आ परीक्षो होइत। ओना जइ हिसाबसँ अंग्रेजी विद्यार्थीक समए खाइए तइ हिसाबसँ वापसी नहियेँ होइ छै मुदा सोलहन्नी नै होइ छै सेहो बात नै। अक्षत कम देवता बेसी रहने बटाइत-बटाइत वेचारी मैथिलीकेँ हिस्से कम भऽ जाइ छन्हि। मुदा तँए कि वेचारी निराश छथि? नै। निराशाक तँ प्रश्ने मनमे नै उठै छन्हि। कारणो स्पष्टे अछि। एक तँ गनल कुटिया नापल झोर जकाँ स्कूलो-कौलेज अछि तहूमे किछु-ने-किछु मैथिलीकेँ सेहो भेटिए जाइ छन्हि, मुदा अधिकांश मैथिल तँ स्कूल-कौलेज देखबे ने करैत अछि। आखिर, ओहो सन्तान तँ माँ मैथिलीएक छियनि। अहुना, जे कुभेलो करै छन्हि तेकरो लेल मनमे कुभेला नहियेँ छन्हि, अपन कर्तव्यसँ च्युत भऽ बेटा-कुबेटा बनि सकैए मुदा अपन कर्तव्य पुरौनिहारि धरती सन धीरज रखैवाली माए केना कुमाए बनि सकै छथि।

ओना हाइ-स्कूल अबैत-अबैत बच्चा ढेरबा भऽ जाइए, तइसँ पहिने विषय रूपी गुरु अपन-अपन शिष्य चुनि लेने रहै छथि। मुदा जहिना जेठुआ बर्खाक गति तहिना बाल-बोधक। मुदा हाइ-रे-हाइ, कुबेवस्थाक चलैत फिजिक्सक एम.ए. रेल-बसक टिकट कटनिहार बनि जीवन-यापन करै छथि। ज्योतिष पढ़ि पुलिसक लठवाहि करै छथि तैठाम जिनगीक बिसवासे केते। जखनि जिनगीएक बिसवास नै तखनि जिनगी जीनिहारेक बिसवास केते। खैर जे होउ...। प्रोग्रामक उमकी राधामोहनक मनमे उमकले रहए, साढ़े दस बजे स्कूल खुजैए, पूर्वाह्नेक काज नीक बूझि विदा भेल। अंतिम फागुनक समए, मास दिनसँ ऊपरेक वसन्त भऽ गेल छल। फगुआक उमकीमे जहिना उमकैक विचार मनमे उठै छै तहिना

राधामोहनक मनमे सेहो दशो दुआरिक दीप जरबैक उमकी रहबे करै। मुदा घरसँ निकलि डेगे-डेग जेते आगू बढ़ैत ओते मन पाछू दिस ससरए लगलै। मनकेँ पछुआइत देखि उमकिओ पाछूए दिस मुड़ि गेलै। राधामोहनक मनमे उठलै जिनगी आ परीक्षा। आकि जिनगीक परीक्षा? शुद्ध पानि ने इनार-पोखरिमे असथिर रहैए मुदा जखनि ओकरा चीनी वा नूनसँ दुषित करबै भलहिं ओ जीवनोपयोगीए किए ने हुअए मुदा दुषित तँ भेबे कएल? राधामोहनक विचारमे दू दल अपन-अपन विचार लऽ कऽ ठाढ़ भऽ गेल। घंटो-लक्कर-झक्कर भेलो पछाति, नै फड़ियाएल जे बुधिओ ज्ञान छी आकि ज्ञान आनैक बाट। विचित्र स्थितिमे राधामोहन ओझरा गेल। जिराएल आदमी जहिना पहिल झोंकमे बेसी दूर दौड़ लगा लइए मुदा धीरे-धीरे उत्साहमे कमी हुअ लगै छै तहिना राधामोहनक सेहो भेल। उत्साह कमिते देहमे थकथकीक आगमन भेलै जेना-जेना थकथकी बढ़ैत गेलै तेना-तेना थकाएल बूझि पड़ए लगलै। अदहा रस्ता तँ टपि चुकल छल मुदा अदहा टपब भारी बूझि पड़लै। गाछीक छाहरि टोहिया कोनैला बड़बड़िया गाछ लग पहुँच, बैस गेल।

एक तँ ओहुना पुरान पत-झड़ि नव पत-धार बड़बड़िया गाछक सेखी रहबे करै। तैपर कनी सिहकी सिहकिते रहै, फागून रहने मजर संग टुकलो रहै। रौद गरमेने दोहरी बोझ राधामोहनक माथपर चढ़ि गेल रहै। मुदा गाछक छाहरि जेना राधामोहनक कोहि फेड़लक। नजरि गाछी दिस बढ़लै। बड़बड़िया आमक गाछक सटले पतियानीमे फैजली आमक गाछ। बड़बड़ीए गाछक जड़ि लगसँ देखए लगल। दुनू आमेक गाछ छी मुदा, एना किए अछि जे एकटा किलो भरिक आ दोसर किलोमे पचास चढ़ैत। प्रश्नक ठेहसँ राधामोहन ठेहियाए लगल। मन घूमि समए दिस ससरलै। चौबीस घंटाक भीतर दिन-रातिमे केते अन्तर होइ छै। बारह बजे दिनमे लोक दुनियाँक कोण-कोण देख सकैए आ बारह बजे राति ओछाइनसँ उठि पेशाबो करैले जाइकाल संगीक जरूरत पड़ै अछि। मुदा फागुन मासमे सूर्योदय आ सूर्यास्त केना एके रंग मनोरहम बनि जिनगीक बाट पकड़ैए। भलहिं एकटा अन्हार दिस बढ़ैत दोसर इजोत दिस।

बड़बड़िया-फैजलीक बीच राधामोहन लटकि गेल। किछु फुड़बे ने करै जे गाछ-बिरिछ लोकक देल छिऐ, ई तँ सुच्चा भगवानक देल

छियनि। लोक ओकर सेवा करैए आ गाएक दूध जकाँ अमृत खाइए। मुदा ई तँ अद्भुत अछि जे दुनू आम रहितो एना अकास-पतालक अन्तर किए छै। भगवान तँ केकरो ने अधला करै छथिन आ ने अधला सोचै छथिन। सोचबो केना करथिन अपने शक्तिसँ ने सोचैकेँ शक्ति दइ छथिन। तहिना हाथ-पएर थोड़े रखने छथि जे कोनो काज करता। ई तँ जरूर लोकक करतुत छी। तैबीच बड़बड़िया आ फैजलीक बीच कहा-कही हुअ लगलै। फल देखि फैजली बाजल-

"रे बड़बड़िया, हमर किलो तोरा नानासँ नम्हरे हएत।"

फैजलीक बात सुनि बड़बड़िया गरमाएल नै, अखनि धरि अपनो मन मानै छेलै जे फैजलीक आगू हम छिहे नै। जहिना बनियाँ दोकानक मंगनी बौस, तहिना छी। मुदा एकटा गुण तँ हमरोमे अछिए जे अनको-आन गाछक आम लेलो पछाति झगड़ा नै हुअ दइ छिऐ। मुदा एकटा फैजली आम, एक छर कुशियार, एक पुड़ा मखान केतेक कपार फोड़ने अछि। मनमे खुशी रहने बड़बड़िया बाजल-

"धरमागती बाज जे जेहन सोझ-साझ हमर शीलो आ डारिओ अछि तेहेन तोहर छौ। केकरो संग कियो जाएत नै। बाज?"

फैजलीकेँ चुप होइते बड़बड़िया रेबाड़ि कऽ फेर बाजल-

"सुनि ले, हमरे भाए-भातिज, तोरा डारिमे सटि अपन मुड़ी कटा हृदए देने छौ, जैपर तूँ ठाढ़ छँ।"

दुनूक झगड़ा देखि राधामोहन अपन काज -स्कूल जा प्रोग्राम लिखब-बिसरि गेल। जिरेला पछाति गाछ तरसँ उठि विदा भेल। ख-खाएल मन रस्ते बिसरि गेल जे केतए जाइ छेलौं। थकथकाइत राधामोहन घरमुहेँ भेल। जहिना हराएल-ढेराएल गाए-महिंसक बच्चा साँझू पहर डिरिआइत घर दिस अबैत तहिना राधामोहन जेतेक घर दिसक बाट टपैत तेतेक जोर-जोरसँ मनमे हूँहकारि उठै।

गाछी आ घरक आधा बाट टपैत-टपैत राधामोहनक भक खुजल। जेना ओँघाएल, निशाएल, भकुआएल इत्यादिक भक खुजैत तहिना रस्ताक भकमोड़ी लग आबि भक खुजलै। मन पड़लै हाइ रे बा जाइ छेलौं

परीक्षाक प्रोग्राम लिखैले आ आबि केतए गेलौं। ओना चारि बजे तक स्कूलक काज चलै छै मुदा ई बारह बजेक रौद अनेरे खाइले जाएब। नै जाएब तँ परीक्षा केना देब? नै परीक्षा देब तँ पास केना करब? दोसर दिस मनमे उठै जे पासे करि कऽ की करब? जखनि आगू पढ़ैक आशे नै अछि तँ मैट्रिक पासकेँ मोजरे केते होइ छै जे बेसी फड़त। जेतबे मोजर तेतबे ने फलो। एम.ए-बी.ए तँ ऑफिस-कारखानामे दरमानी करैए आ मैट्रिककेँ के पुछै छै। तहूमे जेते पढ़लौं तेते तँ ज्ञान भाइए गेल अछि तखनि अनेरे एकटा कागत (सर्टिफिकेट) लेल हरान हएब। द्वन्द्वमे पड़ल राधामोहनक मनमे उठलै-काजक परीक्षा नै जिनगीक परीक्षा असल परीक्षा छी। मुदा जिनगी की? जंगलमे जहिना हजारो-लाखो रंगक गाछ-बिरिछ रहै छै, जे हजारो रंगक फूल-फड़ दइ छै आ नहियोँ दइ छै। तहूमे किछु फूल एहेन होइ छै जे सुगन्धितो होइ छै, सुन्नरो होइ छै मुदा फड़क कोनो दरसे ने होइ छै। तहिना किछु फड़ो एहेन होइ छै जे बिना फूलेक फड़ि जाइ छै। किछु फड़ एहनो होइ छै जे फूलसँ पहिने पड़िए जाइ छै। किछु फड़ एहनो होइ छै जे संगे-संग गाछमे निकलै छै। किछु फूल-सँ-फड़ होइ छै तँ किछु एहनो होइ छै जे फूल केतौ फुलाइ छै आ फड़ि केतौ जाइए। तहिना ने मनुक्खोक जिनगी अछि। जेते मनुख तेते रंगक फूल-फड़। जहिना बर्खाक उपरान्तो आ होइतोखिन बून-बून मिलि धारा बनबैए। भलहिं एक-दोसरमे मिलैत गहींरगर बाट बना गहींर दिस विदा होइए। जइसँ चरो-चाँचर, नीचरस खेतो आ पोखरिओ-झाँखरि भरबो करैए आ नहियोँ भरैए। भरबो तँ अजीबे अछि। केतेसँ भरब कहब सेहो कठिन अछि। किएक तँ जौं सोढ़े तीन हाथक मनुखकेँ अदहा किलो दिन-राति भोजन मानि लेब तँ पँच-पँच सए रसगुल्ला केना पेटमे अँटैए। दस-दस किलो माछ आ दू-दू तौला दही केना पचैए। राधामोहनक मनमे उठलै अनेरे बौआइ छी। काज छोड़ि जखने मन बौआएत तखने बहपनी आबए लगत। जखने बहपनी औत तखने धार-सँ-धारा बनए लगत। मुदा धारोक तँ ठेकान नै छै। एक तँ ओहुना धारक धारा जकाँ जिनगीक बहान नै अछि। किछु एहेन होइए जे जुग-जुगसँ एके स्थानपर बोहति आएल अछि। तँ किछु एहनो अछि जे दोसरमे मिलि अपन अस्तित्वे मेटा लेलक। तेतबे नै, एहनो तँ कोसी-कमला जकाँ अछिए जे सालमे तीन-

तड़पान तड़पैए। जेते राधामोहन पताल दिस वा अकास दिस नजरि दौगबैत तेते रंगक दुनियाँ आ पतालो मनमे अबैत जाइत। अकास दिस तकै तँ देखै जे फनिगा धरतीसँ उठि कूदि-कूदि अकास दिस चढ़ए चहैत, घोरन-चुट्टी मरैक पाँखि पहिरि उड़ए लगैत। तहिना पताल दिस तकैत तँ एक्के पोखरिमे सत-रंगा माछक जीवन-यापन सुख-चैनसँ होइत देखैत। थालक गैंची गैचिया-गैचिया थालमे बिआह-दुरागमन कऽ पत्नीक लगमे राखि जीवनो-यापन करैत आ कुल-खनदानक धुजा गाड़ि बालो-बच्चाक उपार्जन करैत। तहिना पानिएमे माटिसँ ऊपर रहु-नैन-भौंकरी अपन-अपन सीमा रेखा खींच-खींच अपन घरो-दुआरि बनबैत आ परिवार संग मिलि वंशोकेँ जीवित रखने अछि।

बाल मन राधामोहनक जेम्हर नजरि गौगबैत तेम्हर डाभे-कुशमे ओझरा जाए। जहिना चाणक्य छथि नै छला आ तहियाक नालंदा विश्वविद्यालय जे कुश उपटाएब शुरू केलनि ओ कुश अखनो धरि गामे-गाम अछिए, वेचारे असकरे केते गामक उपटौता। तहूमे एहेन समाजमे जे सदति जमीनदारीए वा जागीरदारीए बनबै पाछू लगल रहैए। एक्के रंगक जागीरदारीक बीच समाज थोड़े अछि।

सौन-भादोक वायुक गति भलहिं मंथर भऽ जाए मुदा चैती-फुहा, फुहराम हवा तँ केतौ-सँ-केतौ उड़िते अछि। राधामोहनक मन ओही फुहराम हवाक संग उड़ि पुरुषोत्तम लग पहुँच गेल। मुदा अँटकल नै। दरबारमे बैसैसँ पहिने मनमे उठि गेलै जे त्रेता-जुगक जुआन-जहान राम चारू भाँइ भेला मुदा समाजक बूढ़-बुढ़ानुसक विचार पिताक विचारक आगू किए ने मानलनि। समाजक जेते बूढ़-बुढ़ानुस छेलखिन ओ अपनामे विचार किए ने केलनि जे राम सन परब्रह्म समाजक अंग बनल रहए। नै कि बनलो बिगड़ि जाए। तइसँ नीक जे हुनके (रामेक) वृद्ध पर-पितामह दिलीप छथि तिनके दरबार जा अपन उचिती-विनती किए ने करी जे अपना राजमे बासो देबे करता। जना कानमे कोनो दिशासँ कोनो तरहक अवाज अनासुरती प्रवेश कऽ मनकेँ जगा दैत तहिना राधामोहनक मनमे जगल। अपन संकल्पक संग अपन जिनगी बना जीब। जौं से नै तँ हारि की भेल? जाधरि मनुख दोसराश्रित रहत (वैचारिक छोड़ि) ताधरि पर्यावरणमे कमी हेबे करतै। जिनगीक पहिल विचार जखनि मनमे उठल

तँ कि ओ अधला उठल। जौं नै अधला तँ किए ने पालन-पोसन करब। जाबे धरि दूध पैदा करैक शक्ति मनुखमे नै औत ताबे धरि हंसक बास केना भऽ सकै छै। जेतए दूध रहत तेतए ने हंसोक बास रहत। मुदा दूध-पानि बेरौनिहार हंस मनुखक देल पानि बेड़बैए आकि भगवानक देल जे गाए-महिंसक पेटेमे फँटल रहैए तेकरो बेड़बैए?

बाल-बोध बच्चा जहिना चलै जोगर टांग होइते पछोर धऽ चलए चाहैत मुदा चालिक गति पछुआ दोसर बाट सेहो धड़ा जाइत मुदा बाट तँ बाटे छी। राधामोहनक मन तहिना बाटक आशा बाट पकड़ि बौआए लगल। मन पड़लै अपन पहिल बाट। गाएक पालन-पोसन। मनमे उठिते उठि गेलै परिवारमे गाए नै धाड़ैए। तँ धाड़ैत की अछि। धार-साज तखनि बनै छै जखनि ओइमे मन मधुरस आबि मनकेँ पकड़ै छै। पशुपालनक अंग भेल गाए पोसब। पशुपालन कृषिक अंग रहल अछि। किसानक देशक विकास बिना किसानी प्रक्रियासँ संभव छै? अपना लिए अपन दुनियाँ बना-बना बैस जीवन-यात्रा भरिसक सभसँ नीक होइ छै। जइ बीच निवास करैत अपन तन-मन-धनक एकाग्र करैए। राधामोहनक जिज्ञासा आरो बढ़ल। जिज्ञासा बढ़िते मनमे उठलै लिखित-अलिखित विचार पकड़ब। केता दिन अखबारक पन्नामे पशुपालनक लेख देखै छिऐ, मुदा ओकरा पढ़ै कहाँ छी? कियो पढ़ै छी जे भारत-अमेरिकासँ केते रणसँ जीतलक तँ दोसर कोनो पछुएलहा देशसँ केते रणसँ हारल। तँ कियो पढ़ैत पूरा इलाकामे बैंकक की कारोबार छै। तँ कियो पढ़ैत चोरी-डकैती केते भेल। तँ कियो पढ़ैत रेलक भाड़ा बढ़ि गेल आब लोक गाड़ीमे केना चलत। ई सभ सच्चाइ सामने अबिते राधामोहनक मन बौआए लगलै। अफसोच करैत अखबारसँ रेडियोपर आबि गेलै। जे भाषा बुझै छी तइमे सैकड़ो कार्यक्रम प्रतिदिन कृषिक अछि। अखबार हुसल तँ हुसल आइएसँ रेडियोक कार्यक्रम सुनब। मन आगू बढ़लै। कृषि कौलेज पूसापर गेलै। ओइठाम किसान मेला लगैए जइमे कृषिक अधिक-सँ-अधिक जानकारी भेटै छै। सतसंगे सँ ने संगति सुधरबो करै छै आ बिगड़बो करै छै। अनेरे मन बौआबै छी। जखनि विश्वविद्यालय अछिए तखनि आरो की चाहबे करी। मन ठमकलै। विश्वविद्यालय लेल उन्नति खेतीक जरूरत अछि तैठाम जौं कौलेज कम रहै तहूमे सीमित पढ़ाइ होइ, ओहू सीमितमे

किताबीए शिक्षा धरि समटा जाए, तखनि विकास केना हएत? जरूरति अछि कृषि शिक्षाकेँ खुला विश्वविद्यालय बना सभ स्तरक किसान पैदा करब। जौं से नै तँ कि मन-कर्म-वचन समतुल्य भऽ सकै छै? आकि पुरना लोक नवका कम्पनीक अंगुरक रस पीब बेसी भँसिया कहलनि?

ओझराएल बाट देख-देख राधामोहनक मन आरो ओझरा गेल। हृदए सुखए लगलै। मन तरसए लगलै। बकार बन्न हुअ लगलै। मुदा कि हमहीं सभ ऐ देशक भविस छिऐ। जेकर अपने ठेकान नै छै। कहब असान छै जे नवयुवककेँ भरमबैले कहल जाइ छै मुदा केहेन युवक पैदा भऽ रहल अछि? लगले उड़ि हंस बनि जाएब आ लगले मोड़नीक चालि धऽ लेब आ लगले गाछपर बैस उल्लू जकाँ मुँह दुसए लगबै। जहिना बेर-वपति पड़लापर संगी संग छोड़ि दइ छै तहिना राधामोहनक मनक सभ संगी संग छोड़ए लगलै। मुदा ओहनेठाम सत संगीओ भेटै छै। जहिना नीन निपत्ता तहिना बुधिओ बिला जाइ छै। जइसँ ने देहमे सक रहै छै आ ने अक चलै चलै छै। जौं अके नै चलतै तँ बक केना चलतै। जौं बके नै चलतै तँ बतक जकाँ माटि-पानि एके केना बुझतै। अधमड़ू अवस्थामे राधामोहन रेडियो खोललक। बिहारक पहिल समाचार-

"सातम दिन पूसा मेला आरम्भ हएत।"

सुनिते राधामोहनक ठेहियाएल मन उबियाएल। सातम दिन कृषि मेला छी। जरूर जाएब। दूरे कोन अछि। पहिलका जिले तँ छी। असकरो जा सकै छी नै जौं संगबे भेट गेल तँ आरो नीक। ओना जे मनमे अछि- 'गाए पोसब' ओहन मन केकरो कहाँ देखै छिऐ। जखनि मने नै तखनि काजे की आ संगबे केतए। तँए संगीओक कोन आश। ओना चौक-चौराहापर चर्च कऽ देबै।

सवारीक सुविधा भइए गेल अछि तहूमे डेढ़ बजे मेलाक उद्घाटन हएत, भिनसुरको बस पकड़ने काज चलिए जाएत। तीन दिनक मेला छी तीनू दिन रहब। गरमी मास छिहे, खाइ-पीबैक दोकान-दौरी हेबे करतै। दृढ़ता अबिते संयोगकेँ नीक बुझलक। संयोग कोनो कि अपने अबै छै आकि काज अनै छै। जौं काजे नै तँ संयोग कथीक।

जहिना कोनो अबोध बच्चा आमक लालचमे निसभेर अनहरिओ

रातिमे माए-बाप लगसँ उठि ठेकल आमक गाछ लग पहुँच जाइत तहिना राधामोहन बस पकड़ि पूसा कृति मेला विदा भेल। मेला तँ मेले छी। मुदा मेला की? ओहए ने जे विदेशी खेल-तमाशा, ललिचगर वस्तु आनि अपन जे पुरना मेला छल ओकरा नष्ट कऽ रहल अछि। सुधार जरूरी अछि मुदा अपनकेँ सोल्हनी दुसि अनकर अपना लेब की नेनमति नै भेल? कोनो वस्तुक संग परिवार जुटल छै, ओकर जीविका छिऐ, ओइ जीविकाकेँ तोड़ैसँ पहिने ओहन जीविका अनिवार्य होइत जे समैक संग चलि सकए। बिनु हाथ-पएरक जोंक-ठेंगी जहिना दोसर गर पकड़ि आगू बढ़ैए तहिना जैठामक किसानी जिनगीक हाथ-पएर टुटल अछि तैठाम उपाए केहेन होइ?

उद्घाटनक समए जहिना दिल्लीसँ गाम धरिक लोक तहिना रंग-रंगक रेडियो-अखबारबला दन-दन करैत। मुदा सिपाही कम। तहूमे बेसी ओहने जे उद्घाटन पछाति चलिए गेल। क्षेत्रीयता जौं केतौ अधला होइ छै तँ केतौ नीको छै जरूरति अछि क्षेत्रीय कृषि ज्ञानक। मिथिलांचलक अन्हरो-दिठरा बुझैए जे छहटा ऋृतु होइ छै आ छबो रीतक छह सीमा होइ छै आ सीमापर किछु दिन मेला लगै छै। ओइ मेलाकेँ ओहए सजा पाबैत जे ओइ तेसीसँ चलैत। एके अन्न एके फल आ एके तरकारी किछु कमो दिनक होइत तँ किछु बेसीओ दिनक। हमर स्थिति की अछि ओकरा पकड़ब अछि। जे आन-आन राज्यक स्थितिसँ भिन्न अछि। किताबी दौड़मे देशकेँ जानव असान अछि मुदा भोगोलिक दौड़मे कठिन अछि। भलहिं कठिन अछि मुदा जीवन-दाता तँ ओहए छी। छोड़ि केना जीब?

उद्घाटन भाषण सुनि राधामोहनक मन शीशा जकाँ चमकि गेल। पाथर गीरल काच जकाँ चनचना कऽ चनकि गेल। दुनियाँसँ लऽ कऽ बलुआहा माटि धरिक बात सुनलक। दोखरो बालु सोना पैदा करैए से तँ राधामोहन पहिल दिन सुनलक। ओना पहिनो सुनने रहैए जे बालुसँ तेल भले निकलि जाउ मुदा बातसँ हटि नै सकै छी। मुदा ओकरा कहबीए बुझै छल।

निअमित तौरपर ग्रुप-ग्रुपमे बँटि कार्यक्रम शुरू भेल। एक संग अनेको ग्रुप। केतौ अन्नक खेतीक तँ केतौ तरकारीक, केतौ फूलक तँ

केतौ फलक। केतौ पशुपालन तँ केतौ मुर्गी पालन। जहिना मेलामे प्रेमिकाकेँ देख आरो मेलाक चुहचुही (रौनक) बढि जाइत तहिना राधामोहनकेँ सेहो चुहचुही भरल मेला बुझि पड़ल। बीचक जे अदहा घंटा समए खाली अछि तइमे खा-पी लेब नीक रहत। चारि घंटाक गोष्ठी अछि।

पशुपालन गोष्ठीमे राधामोहन बैसल। तीन शिक्षकक बीच गोष्ठी संचालित भेल। मुदा राधामोहनकेँ बैसारक गप-सप्पसँ बूझि पड़ए लगलै जे भरिसक अपना इलाकाक असकरे छी। किएक तँ मनुखक पहिल परिचए भषे कहबै छै। बेगूसराय आ बकसरिया बेसी बूझि पड़लै। मुदा असकरेमे असकर नै बूझि पड़ै। कहनिहार शिक्षक छथिए, सुननिहार जहिना सभ तहिना हमहूँ रहब।

तीनू शिक्षक पशुपालन लेल पशुक देखरेख, बिमारीक इलाज आ नस्लक चर्च केलनि। चारि घंटाक गोष्ठीमे तीन-चौथाइ समए निकलि गेल। शेष समैमे ओ सभ (तीनू शिक्षक) समस्या सुनैक समए देलखिन। एका-एकी समस्यापर चर्च हुअ लगल। मुदा अनकर भोज सुननहि कि नअ सलिया अँचार छल। राधामोहनक मनमे सेहो प्रश्न उठए लगल। गुलछिया जकाँ घौंदे-घौंदा। मुदा बाल मन राधामोहनक थकथका गेल। हिन्दीमे सवाल जवाब चलै छल। भाषाक गल्ती वस्तुक (विषयक) गल्ती बना दैत अछि। अष्टम सूचीमे मैथिली रहितो मिथिलांचलक कोट-कचहरीसँ लऽ कऽ स्कूल-कौलेजमे हिन्दीए चलैए। अपन धिया-पुताकेँ अंग्रेजीया बनाएब अगुआएल जिनगीक लक्षण बुझल जा रहल अछि। जरूरति अछि जगत-जीव-ईश्वरकेँ जानब। राधामोहन अपन मनक बात मनेमे रखि लेलक। संयोग भेल। तीनू शिक्षक अंतिम पाँच मिनटमे के केतएसँ आएल छी पुछलखिन। क्षेत्र सुनि राधामोहनकेँ हूबा भेल। अपन देश अपन भेष अपन भाषा तँ संगी अछिए। ओ अपन परिचए मधुबनी जिला नाओंसँ देलक। पड़ोसी गामक एकटा शिक्षक। ओ मैथिलीएमे राधामोहनकेँ पुछलखिन-

"अहाँक गाम?"

गामक नाओं सुनिते ओ कहलखिन-

“अहाँक पड़ोसी छी तँए तीनू दिन अपने डेरापर रहब।”

डेराक नाओं सुनि दोसर शिक्षक हुनका आँखि-पर-आँखि देलकनि। आँखिएक इशारामे जवाब देलखिन-

“मिथिलाक धर्म।”

सांस्कृतिक कार्यक्रम होइसँ पहिने धरिक ड्यूटीमे पी.एन.बाबू छला। ओना गोष्ठीक तीनू शिक्षकक डेरा सटले-सटल सेहो छन्हिहेँ। तीनूक एकठाम डेरा रहने साँझ-भोर एकठाम बैस चाहो पीबै छथि आ अपन-अपन देश-कोसक गपो करै छथि। बीचक एक घंटा समए बितबक क्रममे पी.एन.बाबू राधामोहनकेँ कहलखिन-

“राधामोहन, अहूँ मेला देखए एलौं, घूमि-फिर देख लियौ आ हमहूँ ड्यूटी समाप्त कऽ लेब।”

“बड़बढ़ियाँ।”

कहि राधामोहन मेला दिस बढ़ल आ पी.एनबाबू ऑफिस दिस। ऑफिस पहुँचिते अपना ग्रुपक चर्च उठल। गोष्ठीक नीक कार्यक्रम भेल।

बैगकेँ ऑफिसमे रखने राधामोहनक देहो हल्लुक भेल। आगू बढ़िते लोक दिस ठिकिया कऽ तकलक तँ बूझि पड़लै जे ओहने लोक बेसी छथि जे बम्बैया कलाकार जकाँ जेहने जोकर तेहने हीरो हीरो जकाँ छथि। नारद भगवान जकाँ जेतए स्मरण करब तेतए गामक वीणाक संग पहुँचलाहाक बाहुल्य। किसान कम खा कऽ मेहनत करैबला। मुदा, ऐठामक जे कृषिक प्रतिष्ठा बनल रहल ओ तँ रग-रग पकड़नहि अछि, जइसँ किसान परिवार आ किसानक ठेकाने अमेरिको-इंग्लैंडमे दैते छथि। तँए समैक भूख अछि जे किसानक परिभाषा आधुनिक कएल जाए।

सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू भेल। राधामोहनकेँ संग केने पी.एन.बाबू डेरा दिस बढ़ैक विचार केलनि। ओना विश्वविद्यालये कैम्पसमे डेरा। डेराक संग पान-सात कट्ठाक वाड़ीओ झाड़ी।

पी.एन.बाबूक घर मधुबनी जिलाक भगवानपुर गाम, सुरेन्द्रबाबूक घर धर्मपुर नवादा जिला आ दीनानाथबाबूक बक्सर जिला। तीनूक तीन भषे क्षेत्र नै भौगौलिक क्षेत्र सेहो। एग्रीकल्चरसँ जुड़ल तीनू गोटे तँए तीनू

क्षेत्रक जानकारी तीनू गोटेकेँ रहबे करनि। ओना भाषाक बीच कोनो विवाद नै रहनि, कारणो स्पष्टे अछि। गाम-गाम आ घर-घरक लीला अछि जे मैथिली भाषीकेँ मगहिए आ भोजपुरीओ क्षेत्रमे कथा-कुटुमैती होइत आबि रहल अछि। कोनो घरक पुरुष मैथिल तँ भोजपुरनी घरवाली आ भोजपुरिया घरबलाक मगहिनी घरवाली। ओना शब्दक कर्कशपन मगहीक अपेक्षा मैथिली-भोजपुरीमे कम अछि।

कम जवाबदेही रहने पी.एन.बाबू समैपर ऑफिससँ निकलि डेरा दिस बढ़ैक विचार केलनि। मुदा सुरेन्द्रबाबू जवाबदेहीमे आ दीनानाथबाबू रिपोट दइमे पछुआएले रहि गेला। दिनक एक गाड़ी विलम भेने दिन भरिक गाड़ी बिलमिते चलत। मुदा तैयो पी.एन.बाबू दुनू गोटेकेँ कहि देलखिन-

> ''गौआँ आएल छथि। किछु हाल-चालक समाचार तँ आबिए गेल हएत। लेटो-फेट एकठाम बैस चाह पीबे करब।''

आगू बढ़िते जेना पी.एन.बाबू राधामोहनक गौआँ भऽ गेलखिन। पुछलखिन-

> ''राधामोहन, अहाँ गामक पजरेमे सुखेत अछि, ओत्तै हमर सासुर छी।''

परोसी गाम सासुर सुनि राधामोहनक मनमे घनिष्ठता जगल। एकबद्ध (एकबद्ध) गाम, एक उपजा एक खान-पान। उगैत उगना जकाँ विभोर होइत राधामोहन बाजल-

> ''श्रीमान्, अपने लोकनि तँ सभ तरहेँ पैघ भेलिऐ, अपनहि लोकनिक ने बाँहि पकड़ि आगू बढ़बै।''

राधामोहनक बात समाप्तो ने भेल छल आकि बिच्चेमे पी.एन.बाबू टपकला-

> ''जहिना अहाँ अखनि नव-तुरिया छी तहिना जखनि हमहूँ रही तही दिनसँ जनै छी जे एक-दोसराक बाँहि पकड़ि गरा-जोड़ी कऽ जीवन-यात्रा करब नीक होइ छै। मुदा से नै भऽ पबैए। दिन-राति देखै छी जे ठक ठकि बाँहि पकड़ि धकेल-धकेल

गरगोटिया दइए, तैठाम केकरो बाँहि पकड़ि लेब छौड़ा-छौड़ीक खेल नै ने छी।''

पी.एन.बाबूक विचारक गंभीरताकेँ राधामोहन नै परेखि सकल मुदा मनमे तँ ओहन खुशी जागिए गेल रहै जे भरि पेट भोजन, राति-बीच रहैक जगह देलनि ओ जरूर नीक बोलो देबे करता।

साढ़े सात बजे तीनू गोटे पी.एन.बाबू, सुरेन्द्रबाबू आ दीनानाथबाबू एकठाम भेला। डेराक छतेपर बैसार। एक दिस सांस्कृतिक कार्यक्रमक पीह-पाह तँ दोसर दिस गाम-घरक कुशल-समाचार। चाह चलिते पी.एन.बाबूक पत्नी सुरेखा सेहो चाह पीब बैसारमे शामिल भऽ गेली। ओना जइ दिन दीनानाथबाबूक मुहेँ मिरचाइकेँ तीत सुनलनि तइ दिनसँ जेना हिनका देखिते वएह मन पड़ि जाइ छन्हि जइसँ अनेरे हँसी निकलि जाइ छन्हि।

चाह पीब दीनानाथबाबू बजला-

''सभसँ कम उपस्थिति मिथिलांचलेक रहल?''

स्वीकारैत पी.एन.बाबू बजला-

''हँ, से तँ छल। अपन तीनू गोटेक क्षेत्र तीन रंगक अछि। माटिक (क्षेत्रक) असथिरता जइ रूपे अहाँ दुनू गोटे क्षेत्रक अछि ओइसँ भिन्न मिथिलांचलक अछि। एक तँ माटि नरम अछि तैबीच तेज धारक कटावक संग जोरगर बर्खाक संग भुमकमो क्षेत्रकेँ नष्ट करैत रहल अछि।''

पी.एन.बाबूक उत्तर पछाति, चुपा-चुपी भऽ गेल। अका-अकी, वका-वकी सभ सबहक मुँह देखए लगला। खढ़िया बच्चा जकाँ राधामोहन आँखि-कान-मुँह ठाढ़ केने, जे सीखैक समए भेटल किछु सीखब। पी.एन.बाबू गुम जे अपन इलाकाक उखाही करब उचित नै तँए चुपे रहब नीक। मुदा दीनानाथबाबू जेहने काज करैमे चड़फड़ तेहने बजैयौमे फड़कोर। मनमे उठलनि जखनि पी.एन.बाबूक गौआँ एलनि, ओना हुनका अपनो गाम छोड़ना पच्चीस बर्खसँ बेसीए भेल हेतनि, तखनि वएह ने अपन बात उठौता। तैबीच हम सभ अपन क्षेत्रक गप करी ई बूड़िपाना

हएत। बूड़िपाना ऐ लेल जे तीनू शिक्षकक बीच एकटा दूधमुहाँ बच्चाक चाराक ओरियान नै कऽ अपने सभ सभ दिना गप जे ऐ स्कीममे एते सुतरल। पूर्णिमा दिनक नौत दइ छी। नै तँ सासुरक अमराक अँचारक गप करब। नै तहूसँ तँ मिरचाइकँ तीत कहि गृहिणीसँ मुँह दुसा लेब। सभ किछु सम्हारैत दीनानाथबाबू बजला-

''भाय, गोष्ठीमे जे आँखिक इशारा केलौं से अपन अनुभवक आधारपर, तँए एकरा अपना ढंगसँ नै लेबै।''

पी.एन.बाबू पुछलखिन-

''की अपना ढंगसँ?''

दीनानाथबाबू-

''हमरो पत्नी ओम्हुरके छथि। तेते पूजा-पाठ आगत-भागत करै छथि जे घरक जुतिए सुमझा देलियनि। हाटे-बजार दौड़-बरहा तेते करैबतथि जे कमेलहो कि खा कऽ पचए दितथि। तइसँ नीक जेते कमाइ छी पॉकेट खर्च काटि कऽ दऽ दइ छियनि। तैबीच कर्जा केलौं तँ अपन जानी, नइ जौं महाजनी केलौं सेहो अपने जानी।''

मुस्की दैत बिच्चेमे पी.एन.बाबू टिपलनि-

''तखनि तँ सोलहो आना हिसाब घरसँ बेड़ा नेने छी?''

दीनानाथबाबू-

''नै ने बेड़ाएल होइए, हुनका (पत्नी) लाटक जे कियो अबै छथि ओ तँ सासुरेक पट्टी भेला किने किछु-ने-किछु बजा जाइते अछि। जइसँ घुमा-फिड़ा कऽ दोखी भइए जाइ छी। से सभ छोड़ि कऽ''

पी.एन.बाबू गंभीरतासँ प्रश्न दोहरौलनि। प्रश्नक गंभीरताकँ देखैत दीनानाथबाबू बजला-

''देखियौ भाय साहैब, अपनो विचार ओहने जेहने पत्नीक, तँए

अभ्यागती परिवारमे बेसी बढ़ि गेल। मुदा आइक समैमे जे बिगड़ाउ आबि गेल अछि ओ तँ सोझहा-सोझही सामनेमे ठाढ़ भऽ गेल अछि। नव पीढ़ीक बोलमे केते झूठ फेँटा गेल अछि जे सत बूझब कठिन भऽ गेल अछि। जेना-जेना अभ्यागती बढ़ैत गेल तेना-तेना घरक वस्तु बिड़हाइत गेल। तँए इशारा केलौं।''

दीनानाथबाबूक उत्तरक उत्तर फेर सभ गुमा-गुमी भऽ गेला। सुरेन्द्रबाबू ऐ-ताकमे जे अपन प्रवास लगसँ पी.एन.बाबू प्रश्न उठौता भलहिं राधामोहनक जनमसँ पहिने गाम छोड़ि देने होथि, मुदा जएह सएह। पी.एन.बाबूक मनमे उठि गेलनि जे सोझहा-सोझही तीन क्षेत्रक तीनू गोटे छी तँए हुनका सभकेँ प्रश्न उठेबाक चाहियनि जइमे हम बीचक कड़ीक काज करब। दीनानाथबाबू गर लगबैत राधामोहनकेँ पुछि देलखिन-

''भरि मेला रहब किने?''

आग्रह देख राधामोहनक विचारक बान्ह टुटिते भुभुआ गेल-

''श्रीमानक, सासुर आ हमर गाम एक्केठाम अछि। एकबधूए छी। हिनकर ससुर सबहक पूबरिया बाध हमरा गामक पछबड़िया बाध छी।''

ई गप सुनिते बगलमे बैसल सुरेखाक हृदैमे अपन नैहरक दुर्गापूजा देखब मन पड़ि गेलनि। केना संगी सबहक हँजमे चारिए बजे दिआरी लऽ कऽ साँझ दइले जाइ छेलौं से दोसरि-तेसरि साँझमे घूमि कऽ अबै छेलौं। सतमी-सँ-दसमी धरि तँ ठेकाने ने रहै छल जे कखनि अँगनामे छी आ कखनि दूर्गा-स्थानमे। मुदा अखनि किछु जौं बाजब तँ बाते अबला-दबला भऽ जाएत। से नै तँ निचेनमे जखनि गर लगत तखनि गप करब। कियो कि आन छी नैहरक भाए-बोन छी। हमरा सबहक कि ओ युग-जमाना छल जे नैहरेसँ यार भँजिएने सासुर अबै छेलौं। समाजक कियो छी भाए-बोन छी। दीनानाथबाबू प्रश्न दोहरबैत बजला-

''पूबरिया या पछबड़िया बाध कथी कहलिऐ।''

राधामोहन-

“एक रंग खेत रहने माने माटिक सतह एक रंग रहने एके रंगक उपजो-वाड़ी होइ छै आ रौदीओ-दही। ओही बाधमे पनरह कट्ठा खेत अपनो अछि। अपने खेतक बगलमे आन सभ घासोक खेती करै छथि, तँए विचार भेल जे पूसा मेला जाइ छी, जहाँ धरि जे हएत बूझि-सूझि आगू करब।”

उत्तरक आशामे राधामोहन चुप भऽ गेल। मुदा तीनू गोटे - पी.एन.बाबू, सुरेन्द्रबाबू आ दीनानाथबाबू-क बीच प्रश्नक गड़ उनटा-सुनटा पकड़ा गेल। एक दिस देशक स्थितिक चर्च उठल तँ दोसर दिस गामक। तेसर दिस एक-एक किसान परिवारक। प्रश्ने-प्रश्न उत्तरे-उत्तर गँड़ि-मुड़िया हुअ लगल। गपे-सपक क्रममे एहेन गँड़ि-मुड़िया भऽ गेल जे तीनू गोटे अपने उबानि हुअ लगला। मुहसँ बोल निकलिते जहाँ नजरि उठबथि आकि अपने हीआ हारि दन्हि जे ओ गड़बड़ भऽ गेल। एकाएकी तीनू गोटेक मुँह बिधुआ गेलनि। बैसारक रसे समाप्त भऽ गेल। दोहरा कऽ चाहो पीब उचित नै, हमरे सबहक दुआरे भरिसक घरवारिनी भानसो करए नै जाइ छथि तहूमे भरि दिनक ठाढ़ ड्यूटी केनिहार सेहो छथिन। तइसँ नीक जे बैसारे तोड़ि देल जाए। मुदा तीनूक बीच कटाऔझ तँ राधामोहनो सुनलक। ओइ वेचाराक मनमे की उठतै। मुदा बाढ़िक टुटल बाट होइ आकि टाट लगौल रस्ता, टपब तँ कठिन अछिए। सुरेन्द्रबाबू आ पी.एन.बाबूक अपेक्षा दीनानाथबाबूक चपचपी कम रहनि। मन गवाही दन्हि जे कहुना भेला तँ दुनू गोरे सुरेन्द्रोबाबू आ पी.एनो.बाबू सीनियरे भेला किने। गल्ती तँ सभसँ होइ छै। हमरोसँ भेल हएत जे अपने प्रश्नक जवाबमे अपने ओझरा गेलौं। मुदा किछु बाजवो तँ घापर नुने छीटब हएत किने। एक तँ ओहिना दुनू गोटेक मन रब-रबाइत हेतनि तैपर किछु बाजि आरो भक-भका दियनि से नीक नै। मुदा बगलमे बैसल मिथिलांगिनी-सुरेखा तीनू गोटेक दशा देख बीचमे गंगाजल छीटब उचित बूझि, दिओरक लेहाजसँ गरगोटियबैत दीनानाथकेँ कहलखिन-

“मेहनति करि कऽ पढ़ने छी आकि रूपैआ-पैसा दऽ कऽ?”

दिओर-भौजक गप-सप्पक क्रममे दीनानाथ बजला-

“पाइ-कौड़ी तँ खर्चा नै केने छी मुदा दहेजक बदला ससुरसँ

नीक रिजल्ट आ नोकरी जरूर लेने छी।''

दीनानाथक उत्तर सुनि सुरेखा बजली-

''अखनि बैसार तोड़ू भरि दिन खटलौं हेन। फेर काल्हि सेहो अझुके जकाँ खटए पड़त तँए सबेर-सकाल ओछाइनपर चलि जाएब नीक रहत।''

'एक तँ राकश दोसर नोतल' हरे-हरे कऽ तीनू गोटे मानि गेला।

सुरेखा भानस करए बढ़ली। राधामोहन आ पी.एन.बाबू छतपर सँ निच्चाँ उतरि कोठरीमे बैस गप-सप्प करए लगला। राधामोहन-

''श्रीमान्, केते दिनसँ ऐठाम छिऐ?''

राधामोहनक प्रश्न सुनि पी.एन.बाबू विस्मित हुअ लगला। मन पड़लनि नोकरीक पहिल दिन, कौलेजक पढ़ाइ, हाइ-स्कूलक पढ़ाइ, पालन-पोसन इत्यादि। सिनेमाक रील जकाँ जिनगी पाछू मुहेँ ससरलनि। ओही जिनगीक फल ने अखनि धरि भोगि रहल छी। मुदा...? जे गाम-समाज हमरा सन मनुख बना ठाढ़ केलक ओकरा लेल हम की केलिऐ? प्रतिष्ठित किसान परिवारक बेटा रहितो कि ओइ प्रतिष्ठाक हकदार बनि पौलिऐ। भक खुजलनि। मनमे एलनि समस्या तँ अहिना सभठाम ओझराएल अछि मुदा गामसँ आएल नवतुरिया बच्चाकेँ जौं आबो संगतुरिया नै बनाएब तँ सेवा-निवृत्ति पछाति केतए जाएब। मनमे अबिते पी.एन.बाबूक मुँहमे मुस्की एलनि। जेना अनवरत चलैत साँसक जगह जोरसँ साँस लेला पछाति नाभि तक गतिमान भऽ जाइत तहिना पी.एन.बाबूकेँ सेहो भेलनि। बजला-

''राधामोहन, साल भरि पछाति सेवा-निवृत्त भऽ रहल छी, गामेमे रहब। अखनो गाममे एते खेत-पथार अछि जे जौं ओकरा सरिया कऽ करी तँ नोकरीसँ बेसी हएत। मुदा की करितौं? गाम-समाजक कटू-चालि बोल सुनि पढ़ल-लिखल नौजवानकेँ गाम छोड़ैक अनेको कारणमे एकटा कारण ईहो अछि जे जौं कियो एग्रीकल्चर ग्रेजुएट खेतक गोला फोड़ि तरकारी खेती करथि तँ समाजक लोक किचाड़ि कऽ समाजसँ भगा देतनि। कियो कोइर

तँ कियो कुजरा कहए लगतनि। भलहिं ओ बेरोजगारीक सूचीमे नाओं लिखा दिल्लीमे कुल्ली-कवाड़ीक काज किए ने करथि।''

पी.एन.बाबूक विचार सुनि राधामोहन मुड़ी डोलबैत किछु मानबो करैत आ किछु नहियोँ मानैत। मुदा मुँह बन्न केने रहने पी.एन.बाबू नै परेखि पौलनि जे मनसँ केते मानलक। तैबीच पत्नी सुरेखा आबि कहलकनि-

''अपने सभ ने रातिकेँ रोटी खाइ छी मुदा पर-पाहुनकेँ खुआएब नीक हएत? मन असकताइए तँए अपनो दुनू गोटे भाते खा लेब।''

भातक नाओं सुनि पी.एन.बाबूक मनमे खौंझ उठलनि जे एक तँ भरि दिन एम्हर-ओम्हर करैमे देह-हाथ बथा गेल तैपर भात खुआ भरि राति उठ-बैस करौती। मुदा तेसर लग बाजबो केहेन हएत। पाशा बदलैत बजला-

''अहाँ जे एहेन छी, से सबेरे किए ने कहलौं जे चाहे माछे लऽ अनितौं की अण्डे।''

बीचमे राधामोहन बाजल-

''खाइले अनेरे रक्का-टोकी करै छी, जे सभ दिन परिवारमे चलैए सएह हमहूँ खाएब। अखनि जुआन-जहान छी अखनि नै सभ चीज पचाएब तँ कहिया पचाएब।''

सह पाबि अपन गोटी घुसकबैत सुरेखा आगू बढ़ली।

गैस-चुल्हिक भानस, गप-सप्प थोराएलो नै छल की तैयार भऽ गेल। खेनाइ तैयार होइते कोठरीमे लगल गोल मेजपर सभ वस्तु राखि पतिकेँ सुरेखा कहलखिन-

''चलू, पहिने भोजन कऽ लिअ।''

एके टेबुलपर तीनू गोरे बैस तीनू गोटे खेनाइ खाए लगला। राधामोहनकेँ नव बेवहार बूझि पड़ल। किछु बाजब उचित नै बूझि चुप्पे रहल मुदा ओंघराइत मनमे उपकलै जे आरो जे होउ मुदा सोझहामे खेने

तँ लूँगी मिरचाइ आ अँचारक उपद्रव तँ कमिते अछि। तैसंग ईहो तँ होइते अछि जे सोझहा-सोझही सबहक खाएब नपाइते अछि। वएह नाप ने काजो नापत। आकि खाइले दालि-भात आ...?

प्रात भने आठ बजिते पी.एन.बाबूकेँ कार्यक्रमक तैयारी लेल विदा होइसँ पहिने मनमे उठलनि जे अखनि अनेरे राधामोहनकेँ किए संग नेने जाएब। बारह बजेसँ कार्यक्रम शुरू हएत। डेरासँ निकलैत राधामोहनकेँ कहलखिन-

"राधामोहन, अखनि अहाँ नै जाउ। बारह बजेसँ गोष्ठी चलत, तइमे शामिल हएब।"

परिवारक भीतर ने खाढ़ी हिसाबसँ भाए-बहिन, बाप-पित्ती, दादा-दादी, नाना-नानी बँटल अछि मुदा समाज थोड़े परिवारक विचारकेँ ऊपर मानत ओ तँ वहए मानत जे समाजक कल्याणार्थ होइ। ओ तँ उमेरे हिसाबसँ ने मानत। केश-दाढ़ी पाकल दादा-बाबाक श्रेणीमे एलौं समरथ-सकरथ रहने बाप-पित्तीक श्रेणीमे एलौं, एक उमरिया रहने भाए-बहिन, संगी, बहिना, मीत-यार, भजार इत्यादिक श्रेणी अबैत तइसँ निच्चाँ बौआ-दैया अबैत। पचास-पचपन बर्खक सुरेखा आ पनरह-सोलह बर्खक राधामोहन। तहूमे राधामोहनसँ दोवर उमेरक बाल-बच्चा सेहो छन्हिहेँ। ओना राधामोहनकेँ अपने संग जलखै करा पी.एन.बाबू संतुष्ट भऽ गेल छला जे नहियोँ रहने पाहुन भूखल नहियेँ रहत। अराम करैक बेवस्था छइहेँ जे नीक लगतै से करत।

सुरेखाक बात सुनि राधामोहन बाजल-

"खेत-पथार केकरो जिम्मामे नै देने छिऐ?"

"देने किए ने रहब। मुदा एतबो तँ ओही वेचाराकेँ कहिऐ जे कहियो काल जे अबैए तँ गोटे किलो महिंसक घीए नेने आएल, गोटे मटकूर दहीए।"

सुरेखाकेँ भँसिआइत देखि राधामोहन बाजल-

"अहाँ गामसँ हमर गाम बहुत पछुआ गेल अछि।"

“की पछुआ गेल अछि?”

राधामोहन-

“हमर गौआँ तँ तेहेन रगड़ाउ-झगड़ाउ भऽ गेल अछि जे सदिखन झगड़े-झाँटी करैत रहल आ उपजाक कोन गप जे खेतो-पथार बेच कोट-कचहरीकेँ दैत रहल। मुदा एकटा धरि भेल अछि जे जइ जहलकेँ आन समाजक लोक पाप बुझैए ओइ व्याकरणकेँ उनटा, धरम बना देलक। जे एको बेर जहल नै गेल ओ अधरमी ऐ दुआरे बूझल जाइत जे धर्म प्राप्त करैक एको सीढ़ी ऊपर नै उठल अछि।”

राधामोहनक बात सुनि सुरेखाक नजरि राधामोहनकेँ संगतुरिया जकाँ नजरए लगलनि। सतरह बर्खक अवस्थामे बिआह भेल रहए, तइसँ पहिने तँ राधामोहने जकाँ ने बाप-माएक बीच हमहूँ छेलौं। उमेरोक तँ किछु गुण-धर्म छै। जौं से नै छै तँ किए मेलामे एक उमेरिए लोक बेसी रहैए। विस्मित होइत बजली-

“बौआ, एक दिनक घटना ओहिना मन अछि।”

घटना सुनि राधामोहनक जिज्ञासा जगल। मुँह बाबि बाजल-

“से की, से की?”

सुरेखा-

“तोरा गाममे दुर्गापूजा तहियो होइ छेलह, अखनो होइते छह। झगड़ाउ तोहर गौआँ सभ दिनेक। दुर्गापूजाक मेला एतए हुअए कि ओतए हुअए, अहीले झगड़ा भऽ गेल। कोनो गाममे एकोठाम पूजा नै होइ छै मगर तोरा गाममे दूठाम शुरूहेसँ पूजा होइ छै। एकबधू हमर गाम, जहिना पंचायतक गाम सबहक दूरी होइ छै तइसँ लगे हमर गाम अछि। एक्कोमिसिया ने बूझि पड़ए जे दू गाम दोसर छी अपन गाम दोसर। खेतो-पथारमे ऐ गामक लोक ओइ गाम ओइ गामक लोक ऐ गाम काज करिते अछि। जबार, सौजनियाँ, मैनजनी, इत्यादिक भोजो-भातक होइते अछि।”

सुरेखाकेँ भँसिआइत देख राधामोहन बाजल-

"किदैन घटना कहए लगलिऐ?"

जहिना धक दनि आगि फुटैए, हवा-विहाड़ि उठै छै तहिना सुरेखाक मनमे उठल। बजली-

> "बौआ, भरिसक निशा पूजाक दिन रहै। नाच-तमाशा शुरू होइते रहै आकि धुक दऽ पछिमसँ विहाड़ि उठलै। पानि-पाथर सेहो संगे एलै। मेलामे हूड़ भऽ गेल। जह-पटार लोक जेम्हर-तेम्हर पड़ाएल। अपना गामक तीन गोरे रही। गामे दिस पड़ेलौं, मुदा दसो डेग आगू नै बढ़लौं आकि पाथर तड़-तड़ा गेल। भेल जे जान नै बाँचत। कपार फूटि जाएत, तेहेन-तेहेन पाथर रहए। रस्ते कातक एक गोरेक मालक घर चलि गेलौं। हवा तेहेन तेज रहै जे घरक चार उधिया दइतए। मुदा तीनू गोरे चारक बत्ती पकड़ि लटकि गेलौं। कहुना जान बँचल। किदनि बाजल छेलह जे अहाँक गाम नीक अछि?"

सुरेखाक प्रश्न सुनि राधामोहन ओहिना अक-बका गेल, जहिना कियो बजिते-बजिते बिसरि जाइत। ओना दुनू गोटेक गप-सप्प जुगो पाछू घुसुकि चलि गेल छल जे एकक भोगल दोसराक खिस्सा बनि चलि रहल छल मुदा प्रश्न-उत्तर ओकरा ससारि अनलक। पाछू उनटिते राधामोहनक मनमे सुरेखाक प्रश्न धब दऽ खसल। बाजल-

> "हँ, हँ, कहै छेलौं जे अहाँक गामक किसानी हमरा गामसँ अगुआ गेल अछि।"

अगुआ-पछुआ सुनि सुरेखा दोहरबैत पुछलखिन-

> "एकठाम दुनू गोटेक गाम अछि। एकबधू खेत अछि, एक रंग उबजा-वाड़ी तखनि किए एना भेल?"

सुरेखाक प्रश्न सुनि राधामोहन अपनाकेँ टटोलए लगल तँ बूझि पड़लै जे प्रश्नक उत्तर ढंगसँ नै दऽ पएब, मुदा आत्माराम कहलकै जे नै पान तँ पानक डंटीओ आकि गाछोक डंटीसँ काज चलिते अछि। तखनि

जौं उत्तरक लगलो-भीड़ल जवाब भऽ सकत तैयो तँ किछु-ने-किछु तात्विक बात आबिओ जाएत। पहिने तत्व तखनि ने एकत्व आकि समत्व। बाजल-

''दीदी, अगुआएल-पछुआएल तँ खेनाइ-पीनाइ, ओढ़नाइ-पहिरिनाइ आकि घरे-दुआर देखने ने बुझै छी।''

सुरेखो अपन मनकेँ, गोधूलि बेला जकाँ बहटारि राधामोहनक विचार लग ठाढ़ केलनि। जहिना गुरु-शिष्य बीच एक-दोसराकेँ उकटा-पैंची होइत तहिना सुरेखा पुछलखिन-

''जखनि दुनू गामक लोक खेतीए करै छथि, तखनि किए भगवान दू रंग बना देलखिन?''

सुरेखाक प्रश्न राधामोहनकेँ ओहिना भरिआएल बूझि पड़ल जहिना युनिवर्सिटी वा बोर्ड परीक्षामे प्रथम स्थान पबैबला छात्र सेहो किछु प्रश्नसँ निरुत्तर देख अपनाकेँ अलग कऽ लइए, तँए कि ओकरा भुसकौल कहबै सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। हलसि कऽ ही खोलि राधामोहन बाजल-

''दीदी, आन चीज तँ नजरिपर नै चढ़ैए मुदा एकटा चढ़ैए।''

नजरिपर चढ़ैबला बात सुनि सुरेखाक मन बाजल नजरिपर चढ़ैबला बातकेँ जौं नजरि चढ़ा नै चढ़ाएब तँ ओ ढलानपर छिछैलिए जाएत। तँए एकत्व भऽ सुनए पड़त। बजली-

''बौआ, हमरा-तोरा बीच कोन लजेबा-धकेबा अछि। हम जेठ बहिन माइए-दाखिल भेलिअ, तूँ भाए-बोन बाप-दाखिल सीमा परहक सिपाहीए जकाँ जिनगीक भेलह। तखनि किए धक-मकाइ छह।''

सुरेखाक भाव देख राधामोहन भवलोक पहुँच गेल मुदा अथाह भवसागर देख बाजल-

''दीदी, अहाँ गामक बेसी किसान एकाजू छथि। खेती करै छथि, गाए-महिंस पोसै छथि इत्यादि-इत्यादि मुदा हमरा गामक बेसी जोतदार दू-दिसिया काज करै छथि। अन्नो-पानिक खेती

करै छथि आ सामाजिक बंधनक बीच सेहो करै छथिन। बंधने ने समाजकेँ बान्हि बेकतोकेँ बन्हैए। अपना काजक समए समाजक काजमे लगबै छथि तइसँ खेतीक उचित देख-भाल नै कऽ पबै छथि। जइसँ कम आमदनीक जिनगी बनि गेल छन्हि। मुदा अहाँ गामक किसानी बाट मजगूत बनि गेल अछि।''

राधामोहनक बात सुनि सुरेखाकेँ मामा मन पड़लनि। मामा मन पड़िते मन पड़लनि वाड़ी-झाड़ी आ माए संग मामाकेँ भाए-बहिनक ओ रूप जे दुनू मिलि जिनगी लेल ठाढ़ छथि। की मामा पाहुन नै जे माएक वाड़ी-तामि-कोड़ि तीमन-तरकारीसँ फल-फलहरी धरिक गाछ-बिरिछ लगा दैत। राधामोहन कियो आन छी, जौं करजानमे केराक घौर पाकल हएत तँ चारि छीमी खुआइओ देबै आ दू हत्था गामो नेने जाइले कहबै। दू परानी केते खाएब, पच्चीस-पच्चीस-तीस-ती हत्थाक केरा घौर। जे तीने दिनमे दुरिओ भऽ जाइए। बाजलि-

''बौआ, चलह। गाम जकाँ तँ बीघा-बीघे वाड़ी-झाड़ी आकि गाछी-बिरछी नहियेँ अछि मुदा जेतबे अछि से चलि कऽ देखहक जे अपना जोकर दुनियाँ बनौने छी की नै।

वाड़ी-झाड़ीक नाओं सुनि राधामोहनक मन आरो चमकल। खोलियापर राखल हँसुआ हाथमे नेने सुरेखा आ पाछू-पाछू राधामोहन डेरासँ निकलि वाड़ी पहुँचल। जहिना मक्कड़मे हर्ड़ी-बिदेसरक मेला पहुँच यात्री फरिक्केसँ हिया कऽ देखैए जे केतए कोन तरहक रूप छै तहिना वाड़ीक टाट खुजिते राधामोहन हिया कऽ देखलक तँ अजीव दुनियाँ बूझि पड़लै।

पानिक नालीक बगलमे पाँच बीट केरा पाँच रंगक देखलक। गाछेमे एकटा पकलो। बीटक ऊपर जाल लगल। चिड़ैक कोनो डरे नै जे चोरा कऽ खएत। सूखल डपोर कटैत सुरेखा बजली-

''बौआ, कहुना भेलह तँ तूँ पुरुखे पात्र भेलह किने ओरिया कऽ ओइ घौरकेँ काटह।''

पाकल केरा घौर कटैक नाओं सुनिते राधामोहन चपचपा गेल,

कहुना तँ पहुनाइमे छीहे ने। उचित-उपकार दुनू। बाजल-

"दीदी, हँसुआ दिअ, आ अहाँ हटि जाउ, केराक पानि बड़ खराब होइ छै, कपड़ामे एहेन दाग लगा दइ छै जे कपड़ा फटि जाएत मुदा छूटत नै।"

राधामोहनक रक-छक विचार सुनि सुरेखा बजली-

"तखनि फेर लोक ओइ दागकेँ छोड़बै केना छै?"

जहिना परीक्षा भवनमे पहिलुक प्रश्नकेँ हल्लुक बुझिते अगिलो बिसरि हाँइ-हाँइ परीक्षार्थी लिखए लगैत तहिना राधामोहन बाजल-

"दीदी, दुनियाँमे एहेन कोन दुख अछि जेकर दबाइ नै छै, तखनि तँ...।"

डोलैत घरमे जहिना घरवारी सोंगर लगा-लगा ठाढ़ रखए चाहैत तहिना सुरेखा अपन जिनगी संग राधामोहनकेँ खुट्टा नै सोंगरे बनए चाहली। मुदा राधामोहनक चटपटाइत मुँह देख बजली-

"हँ तँ किदनि कहै छेलह?"

ठेंगीकेँ ठेंठिए कोदारि भार थम्है छै। बड़का मुरूछि जाइ छै। तहिना ने केरो दागक दबाइ अछि। बाजल-

"दीदी, केहनो दाग किए ने होय, मुदा दबाइओ संगे छै।"

संगे दबाइ सुनि सुरेखा बजली-

"से की?"

"आन जीवित गाछमे ने दूध आकि लस्सा होइ छै, मुदा केरा तँ छी गाछक झड़। तँए एकरा एकरे सूखल डपोर जे छै, ओकरा आगिमे जरा कऽ ओही छाउरसँ रगड़लापर दाग छुटै छै।"

केराक घौर काटि थम्हकेँ सेहो काटि-खोंटि कात कऽ देलक। हँसुआमे लगल पानि माटिपर रगड़ि साफ केलक। आगू बढ़िते कट्ठा भरिक फलक गाछो आ झाड़ीओ देखलक। गमैआ आम-जामुनक गाछ

जकाँ तँ एकोटा फलक गाछ नै मुदा कामधेनु जकाँ सालो भरि फल दइबला सभ। आब कहू जे फड़ैक भार जेकरा नहियोँ छै तहू गाछ सभमे फड़ लटकल छै। अनेरे मन घुरियाएल अछि। मुदा नै गाछोमे अनरनेवा पंडित अछिए। फूल भलहिं होउ, फड़ब पाप बुझिते अछि। मुदा तँए कि धात्रीम सन सावित्री थोड़े अछि जे बिनु सत्यवाने फड़बे ने करत। हँ से तँ अछिए भलहिं टाट-फड़क, आड़ि-धूर, घाट-बाट दुआरे माटिक बाट किए ने बन होउ, मुदा अकासक बाट तँ खुजल छइहे तँए ने कहै छै जे हे प्रियतम देह भलहिं तीन कोस हटले किए ने होय मुदा मन तँ दुनू गोटेक संग मिलि रचिते-बसिते अछि।

समुचित भोजन लेल जहिना आन-आन वस्तुक महत अछि तहिना ने फलोक अछि। मुदा फलक दुर्दशा जिनगीकेँ सुदशा दिस बढ़ए देत। जे मिथिलांचल कुकाठ-सुकाठक संग चानन सन वृक्ष पैदा करैक उर्वर शक्ति संयोगने अछि की ओइ शक्तिकेँ पूजा केने बिना कल्याणक असीरवाद भेट जाएत। जौं मुखौटे होइतै तँ काँच माटिक एकटा दिआरी नेसि, हाथ-जोड़ि निहोरा केलासँ भेटितै तँ अदौसँ होइत आएल आ मिथिलांचल नीचे मुहेँ किएक धसैत गेल। सालो भरि चलैबला फल जैठाम छै, तैठाम...? खींरा लत्ती देख राधामोहन बाजल-

''दीदी, खीड़ो लत्ती बीचमे देखै छी?''

राधामोहनक जिज्ञासाकेँ सुरेखा परेखि गेली। जहिना छोट-बच्चाकेँ माए-बाप, भाए-बहिन ओँगरीक इशारासँ कौआ-मेना देखा ओकर नाओँ सिखबैत तहिना सुरेखा राधामोहनकेँ सिखबैत बजली-

> ''बौआ, खीड़ो फले छी। फलेक गुण ओकरोमे छै, मुदा अपन पारिवारिक जिनगी तेहेन बना नेने अछि जे तीमन-तरकारी-सँ-फलाहार धरि पुड़बैए।''

सुरेखाक बाट राधामोहनकेँ छुछुन बूझि पड़लै। छुछुन ई जे माटिपर पसरल लत्ती आ लत्तीक फड़, केना फलाहार हेतै। हँ एते तँ देखै छिऐ जे करेला-झुमनी-सजमनि जकाँ फड़ैए, सजमनिसँ भलहिं होट हुअए मुदा करैला-झुमनीक तँ संग-तुरिया अछिए। तरकारी मानल जा सकैए। तरकारीकेँ केना फल मानि लेब फड़ तँ तरकारीओ फड़ैए मुदा

लगले मन पलटि महकारी लग पहुँच गेलै। ओकर तरक बीआ जेते तीत होइए ओते तँ करैलोक ने होइ छै। कहाँ राजा भोज कहाँ भजुआ तेली। करैलाक गुद्दा-रस भलहिं तीत होउ मुदा ओइसँ पालल-पोसल बीआ कहाँ तीत होइ छै। दुनूमे अकास-पतालक अन्तर होइ छै। गोल-गोल, हरिअर-हरिअर, लाल-लाल फड़क बीच महकारीक बीआ खाइ-काल खेलहोकेँ बोकरा दइए, से केना करैलाक पड़तर करत। ऊँट जकाँ भलहिं देह उबर-खाबर होउ, रसो आ गुद्दो तितौंस किए ने होउ, गलि-पचि अपने किए ने सड़ि जाए मुदा ओहन बीआ तँ दैते अछि जे संगी-साथी जकाँ मनुखक भोज्य बनि चलैत आबि रहल अछि आ आगूओ चलैत रहत।

खेलौना दोकानपर, रंग-रंगक खेलौना देख जौं बच्चा गुमकी लाधि दिअए तँ किछु कारणक आशंका होइते छै। स्वर्ग सदृश वाड़ी-झाड़ी रहितो राधामोहनकेँ अपन विचारक दुनियाँमे विचड़ैत देख सुरेखाक मनमे भेलनि जे भरिसक रोड़ा-रोड़ीक ठेंस ने लगि गेलै। बजली-

> “बौआ, की करब, जेतबे छुट्टी रहत तेतबे टा ने दुनियोँ बसाएब। इच्छा केकरा ने होइ छै जे इन्द्रासनक आसनपर बैसी, मुदा इच्छे भेने थोड़े होइ छै। अही सुखक लोभमे ने एकटा बौना आबि हरिश्चन्द्रकेँ राज-पाट ठकि लेलकनि। अखुनका वियतनाम राज थोड़े छी जे सालक-साल, दशकक-दशक रगड़ैत रहत। कहू जे जइ राजाकेँ एतबो दया नै जे आमजनक राजकेँ अपना स्वार्थमे केना लगा देबै।”

ओना सुरेखा राधामोहनक मन बहटारए चाहली मुदा जिद्दीयाह गाए-बड़द जकाँ गाछक मुड़ीएपर राधामोनक नजरि अँटकल। राधामोहन बाजल-

> “दीदी, अहाँ तँ खीड़ाकेँ फल कहै छिऐ, एते तक मोनेमे शंका नै अछि जे फड़ नै होइ छै, मुदा फड़-तँ-फड़ भेल आ आमोक गाछक फड़े भेल भलहिं कोशा धरिकेँ फड़े कहिऐ। जिनगीक नीक फल सभ चाहैए आकि नीक फड़ कदीमोसँ नहमर चाहैए?”

जहिना बाल मन वा जुही फूल, परोड़ इत्यादि कोनो नव गाछक सरारि सदृश सर-सरा कऽ आगू धरि बढ़ि जाइत तहिना राधामोहनक प्रश्न

आगू बढ़ल मुदा ओरिया कऽ मुड़ीकेँ मोड़ि सुरेखा बजली-

> ''बौआ, खीड़ाक तरमे तीन फाँक होइ छै, मुदा होइ छै तीनू बरबरि। ऊपरका जे आवरण होइ छै ओ ओहन होइ छै जे दिठा-दृश्य देखए नै दइ छै। ओकरा हटौला पछातिए देख पड़ै छै। मुदा जौं ओकरा कत्तासँ गोल-गोल काटल जाइ छै तँ कहाँ तीनूमे सँ कियो कहैत जे कम छी।''

कहि सुरेखा सोचए लगली जे भरिसक राधामोहनक मन उचटि गेल अछि। जाबे तक दोसर दिस नै तकाएब, ताबे नजरि नै घुमतै। तँए दोसर दिस तकाएब नीक हएत। दोहरबैत बजली-

> ''बौआ, मेलो जाइक समए लगिचा गेलह। नहाइत-खाइत समए भैए जाएत। हमहूँ जाएब किने?''

दोसर दिनक साँझ। शिक्षण प्रक्रियाक समाप्ति। काल्हि विसर्जन छी। भोज-भात आ सांस्कृतिक कार्यक्रम रहत। राधामोहन आ पी.एन.बाबू गाएक घरक थैड़ देखैत रहथि। मच्छरक धनधनेनाइसँ बूझि पड़लनि जे घूरक जरूरत अछि। दुनू गोटे गाइए घरमे रहथि तखने सुरेन्द्रोबाबू आ दीनानाथोबाबू संगे पहुँच बजला-

> ''गाएक घरमे अखनि किए छी?''

ई गप सुनि पी.एन.बाबूकेँ संकोच नै भेलनि। ओना तीनू गोटेक डेरो एकठाम आ वाड़ीओ-झाड़ी एकरंगाहे, तँए प्रश्न बेवहारिके छल। पी.एन.बाबू बजला-

> ''तीन-चारि दिनसँ एते बेस्त्ता बढ़ि गेल जे अपन जिनगीए छिड़िया-बितिया गेल। बूझि पड़ैए जे तीने-चारि दिनक बीच तेते मच्छर बढ़ि गेल जे अवधात करत। मुदा आइओ तँ आब करैक समए नहियेँ अछि। काल्हि बूझल जेतै।''

दीनानाथबाबू-

> ''काल्हिओ की भरि दिन छुट्टी हएत, भोज-भात आकि नाच-तमाशा देखिनिहार-खेनिहार लेल ने, मुदा विदाइ-समारोह सेहो छी

किने?''

''हँ से तँ छी। मुदा ओ तँ भोज-भात पछातिए ने हएत तैबीच तँ समए बँचिते अछि।''

कलपर हएत-पएर धोइ राधामोहनो आ पी.एनो.बाबू लग पहुँचबे केला आकि ओम्हरसँ सुरेखा चाहो नेने एली। ठाढ़े सभ कियो चाह पीबए लगला। दीनानाथबाबू राधामोहनकेँ कहलखिन-

''कौल्हुका नोत-हकार दइ छी। खेबो करब आ देखबो करब।''

दीनानाथबाबू गप तँ चालि देलनि, मुदा भोजैत तँ नै छला। भोजैत सुरेन्द्रबाबू मुदा जहिना घाटपर चेल्हबाक चालिमे भुन्नो फँसि जाइए, तहिना वगलमे बैसल सुरेन्द्रबाबूकेँ भेलनि। दीनानाथबाबू तँ पठौल नै छेलखिन जे मद्दी हेतनि। अपनो मुँह खोलए पड़तनि, भलहिं राधामोहन नै बूझि पबैत मुदा दुनू परानी पी.एन.बाबू तँ छथिए। पुलिसक आगू अनेरे पड़ाएब नीक नै होइ छै, खिहारि कऽ पकड़ि खढ़िया मोर मारि पकड़िए लेत आ जौं पकड़ि लेत तँ सभ ठेही झाड़ि देत। राज-भोज छिऐ, जेते खाएत तइसँ बेसी छिड़ियाएत। बजला-

''राधामोहन सझिया नतहारी हेता।''

जहिना भोज-काजमे पहिले योजना बनैत पछाति हिसाब-वारी होइत। मुदा बैसार दुनू दिन चलैत। एक तँ बैसारमे नतक बँटवारा तखनि नतहारीक चर्च नै। मुदा दोसराक पाहुनकेँ ईहो पूछब उचित नै जे केम्हर एलौं। मुदा जहिना परिवारक छोट भाएकेँ अनको कोहवरक रस्ता खुजले रहै छै तहिना दीनानाथबाबू। जेठ लग जेहने गल्ती तेहने सही। जौं सही अछि तँ मुड़ी झुलौता जौं गल्ती अछि तँ सुधारि देता। बजला-

''राधामोहन, अहाँ पढ़बो करै छी।''

दीनानाथबाबूक प्रश्नसँ राधामोहन ठमकि गेल। केना कहबनि जे परीक्षाकेँ अखनि छोड़ि आगू बढ़ा देलिऐ, आ अखनि घरक पाछू। मुदा उत्सुक मन बाजल-

''पढ़ितो छी, आ परिवारक जे दशा अछि ओकरा जौं नै रोकब

तँ केते दूर ढरकि कऽ चलि जाएब तेकर कोनो ठीक नै। तँए किछु करैक विचार सेहो अछि।''

राधामोहनक सह पाबि दोहरबैत दीनानाथबाबू पुछलखिन-

''परिवार केतेटा अछि?''

''ओना कहैले तीन गोरे छी मुदा...।''

''मुदा की?''

''पिता अंतिम अवस्थामे छथि, अब-तब करै छथि, कखनि छथि कखनि नै तेकर कोनो ठीक नै।''

''केते उमेर हेतनि?''

''सेहो नीक जकाँ नै बुझै छी। झूड़-झूड़ शरीर भेल छन्हि। तइसँ तँ अस्सीसँ ऊपरेक कहबनि, मुदा माएक जे गतिशीलता देखै छी तइसँ बूझि पड़ैए जे घरक चीनवारेक खुट्टा टुटि गेल। आइ करी कि काल्हि, करए तँ हमरे पड़त। सएह सभ मन हौंड़-हाँड़ि देने अछि। तँए गाए पोसैक विचार करै छी।''

आँखिक इशारा सुरेन्द्रबाबूक देखिते दीनानाथबाबू चुप भऽ गेला। सुरेन्द्रबाबू पुछलखिन-

''राधामोहन, विचार तँ नीक अछि, मुदा किछु प्रश्नक उत्तर बूझब जरूरी अछि। भने मेलेमे एलौं। भोज-भात खेनिहार सभकेँ खाए दियौ। मुदा, कहब जे जाधरि अपन मन काज करैले ने मानि जाए, ताधरि रहू। जौं जीवनमे एकोटा काजक लोक भेट जाए तँ जरूर ओइ जिनगीकेँ सार्थक मानल जेतै।''

सुरेन्द्रबाबूक मुँह खुजल देख सुरेखो अपन बातकेँ राखब उचित बूझि बजली-

''दीनाबाबू, जखनि राधामोहनसँ गप भेल तँ कहलक जे हमरा गामसँ अहाँक गाम नीक अछि। पच्चीस बर्खसँ नैहर गेबो ने केलौं हेन, अठारह बर्खक अवस्थामे छोड़ने रही तँए जाएब तँ

तर पड़ि गेल अछि। तँए सेहो कनी कखनो दुनू भाए-बहिनक बीच कहि देब।''

सुरेखाक प्रश्नसँ सुरेन्द्रबाबू घबड़ेला नै मुदा दिन भरिक देहक थकान, तैबीच काल्हि विदाइ समारोह सेहो छी एहेन ने हुअए जे औगताइमे प्रोफेसर साहेबक जैकेट प्रिंसिपल साहैबक डालीमे चलि जान्हि आ प्रिंसिपल साहेबक प्रोफेसर साहैबमे, तँए मन बोझिल, जे केना एहेन सुराग भेट जाएत जे जे जेतै कऽ अछि से से तेते चलि जाए। मुदा परिवारो तँ परिवारे छी। परिवारकँ चैन रखने बिना एको छन चैन भेटब कठिन होइ छै। दीनाबाबूकँ सम्बोधित करैत सुरेन्द्रबाबू बजला-

''दीनाबाबू, एना करू जे एकेटा उत्तरमे दुनू प्रश्न आबि जाए।''

हूँहकारी भरैत दीनानाथबाबू बजला-

''हँ-हँ बढ़ियाँ-बढ़ियाँ, हनुमानजी जकाँ पहाड़े चलि औत अपन-अपन सभ ताकि लेब। मुदा भाय-साहैब एकटा बात पूछब हमरो रहि गेल अछि?''

सुरेन्द्रबाबू-

''कथी ओहो राखिए दियौ?''

दीनानाथबाबू-

''राधामोहन, एकटा बात कहू जे परिवारमे बाहरक लोटा दूध अबैए आकि घरक लोटा बाहर जाइए।''

दीनानाथबाबूक प्रश्न सुनि पी.एन.बाबूकँ नै रहल गेलनि बजला-

''दीनूबाबू की कहब, बिसरि गेलौं रमझिमनी-रामझुमनी। भिंडीक माला जपि-जपि भाषाक जान बँचबै छी। मुदा क्षेत्रो तँ किछु छी।''

एक संग अनेको प्रश्न उठैत देख सुरेन्द्रबाबू विचारलनि जे नीक हएत सभ प्रश्नकँ बहटारि काल्हि लेल राखि ली आ किछु मनोविनोद संग बैसार उसार कऽ ली। चौअन्नियाँ मुस्की दैत दीनानाथबाबूकँ पुछलखिन-

“अँए हौ दीनू, उद्घाटन बेर किए हँसऽ लगल रहह?”

टटके बात, बिसरैयौक तँ नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा एकटा जवाबदेहक प्रश्न छी। की कहबनि। हम सभ कहुना भेलौं तँ घरवारीए भेलौं किने, किए ने खोलि कऽ सभ गप करब। मुस्कीक जवाबमे ठहाका दैत दीनानाथबाबू बजला-

“भाय, लाबा जकाँ छिड़ियाएल नै, मुदा छिड़ियाइबला बात तँ रहबे करै ने।”

दुनू गोटेक बीचक बातमे सुरेखा लाड़नि लाड़लनि-

“उद्घाटने जखनि हँसा गेल, तखनि बाँकीए कथी रहल?”

सुरेखाक प्रश्नसँ सुरेन्द्रबाबू थकम्केला। थकमकाइत देख पी.एन.बाबू सम्हारैत बजला-

“बात भेल किछु ने आ अनोन-विसनोन हुअ लगल।”

अपन भाँज बूझि दीनानाथबाबू बजला-

“भेल ई रहै जे चारि गोटेकेँ चरिमुखी दीप नेसि उद्घाटन करक रहै। एकटा मोमवत्ती नै ने जे तीन गोटे डाँट पकडू आ एक गोटे सलाइ नेसि लगाउ। चरिमुखी दीपमे तँ बाँटल चारू गोटेक। सभकेँ दीप जराएब छन्हि। पहिल गोटे जखनि सलाइ खरड़ि एकटा दीप नेसि देलखिन तखनि दोसर-तेसरकेँ सलाइ खड़ैक कोन प्रयोजन। सलाइ काठीकेँ तँ दीपेमे लेसब असान होइतै। से नै केलनि, केलनि ई जे तेसर गोटे जे रहथि ओ राशिमे राशि नै काटि सलाइ खड़ए लगला आकि मसल्ला उड़ि कऽ कुर्तापर पड़ि गेलनि कुर्ता तेहेन जे ओतबेमे दगा गेलनि। सएह हँसी लगल रहए। अहूँ तँ मंचेपर रहिऐ। अहाँ नै देखिलिऐ।”

दीनानाथबाबूक बातसँ सुरेन्द्रबाबूकेँ दुख नै भेलनि। बजला-

“तूँ छुट्टा छह, हम बान्हल छी, तँए किछु...।”

"अच्छा जे होउ, कौल्हका-उगरल वस्तु-जात हएत ओ भोजो हएत आ राधामोहनकेँ मेलाक दर्शन सेहो करा देबनि। अखनि जाए दिअ, दू घंटा दुनू कातक चेकिंग बेवस्था करैमे लागत। तहूमे तीन-तीन चेकिंगमे चोरकट रस्ता रहिए जाइ छै।"

राजसी भोज रहितो तेहेन चोरकट बाट पकड़ा गेल जे ने भोज खेनिहार आ ने भोजैत बूझि सकला जे भरिपेट्टा छी आकि टी-पार्टी। जहिना केकरो घर लुटेबै काल जेकरा जे हाथ लगैत से सएह पार कऽ सबुर करैत तहिना एते तँ सतर्की तीनू गोटे -सुरेद्रबाबू, पी.एन.बाबू आ दीनानाथबाबू- कैए नेने छला जे मझोलका टप रसगुल्ला, अँचारक बोयाम आ निमकीक पैकेट फुटा कऽ दोगमे रखिए नेने छला।

केतए गेल तीन दिनक मेलाक चुहचुही। चारि दिनक चान फेर अन्हराइए गेल। खैर जे होउ। रिक्शापर चढ़ा रसगुल्ला टप सुरेन्द्रबाबू ऐठाम पहुँच गेलनि।

जखनि चाह बनि राखल अछि तखनि अनेरे फकचोदमे समए बीता चाह सरा लेब ई बूड़िबकी नै तँ की हएत। समैसँ एक घंटा पहिनहि सुरेन्द्रबाबू पी.एन.बाबूकेँ आ दीनानाथोबाबूकेँ कहि देने छेलखिन-

"अनेरे चौचंगमे पड़ल छी। चलू, डेरेपर।"

घरमुहेँ होइ काल पी.एन.बाबू दीनाबाबूकेँ टिप देने छेलखिन-

"दीनूबाबूक चलती बेस नीक रहलनि।"

पी.एन.बाबूक प्रश्नकेँ गोड़ियाबैत सुरेन्द्रबाबू कहि देलखिन-

"भाएमे कियो दादा होथि। बात बरबैरे, दीनूबाबू कियो आन छथि। मुदा एकटा बात नै बूझि सकलौं जे एहेन चलती अनभुआर जगहमे केना बनि गेलनि।?"

सुरेन्द्रबाबूक प्रश्न सुनि दीनानाथबाबू जोरसँ ठहाका मारलनि। मकैया लाबा किछु उड़ि कऽ छिड़ियेबो कएल किछुकेँ मुहँमे गोड़िया बजला-

"मुड़जनमा लग पहुँच की कहलिऐ, से कहि दइ छी। कहलिऐ, विश्वविद्यालय प्रतिनिधि छी, तँए चेहरा चीन्हि लिअ।"

मुस्की दैत पी.एन.बाबू दोहरौलनि-

''ओ की कहलनि?''

''कहता की, हमरा कि कोनो नै बूझल छलए जे ओ खानक इंजीनियर छथि, खेत-पथारक मेलामे हमहीं ने सम्हारबनि। तैठाम जौं एनए-ओनए करता तँ दसटा गामो-घरक लोक ने छै धान कटैक ओजार कोदारि कहा देबनि आ खेत तामैक हुँसुआ।''

मुस्की दैत सुरेन्द्रबाबू पुछलखिन-

''आरो कि सभ गप भेल?''

''गप की होएत, किम्हरोसँ आबि जहाँ नजरि दिऐ आकि हाँइ-हाँइ कऽ टेबुल परहक पएर नीचाँ उतारि समधानि कऽ बैस जाथि। मुदा हमरो कोन जरूरति जे अनेरे नजरि अँटकौने रहितौं। कहुना भेल तँ अपन मेला भेल किने, कनी-मनी टुटो-नफा तँ सहैए पड़त।''

दीनाबाबूक बोहैत धारकँ रोकैत सुरेन्द्रबाबू कहलखिन-

''छोड़ू, मेलाक गप। जे भेल सएह ने नीक। कागतपर तँ भेबे कएल। लाइव टू लैंड होय या नै होय। कागजे ने सभ किछु छिऐ। तीन मन तीन सए मन बनै छै। आ तीन सए मन तीन किलो। जेहने कागत तेहने ने रोशनाइओ आ हाथक कलमो। आब लोक थोड़े गीधक पाँखिक कलम बनबैए।''

सुरेन्द्रबाबूक विचारमे हूँहकारी भरैत दीनानाथबाबू बजला-

''बेस कहलौं, कौआ कान नेने जाइए तँ पहिने अपन कान देखब आकि कौएकँ खिहारब। छोड़ू दुनियाँ-दारीक गप। अपन भोजक योजना बनाउ।''

पी.एन.बाबू बजला-

''केते गोटे भेलौं से पहिने जोड़ि लिअ। आरो कोन-कोन विन्यास बनए आ बनौती आ के परोसि कऽ खुऔती से विचारि

लिअ।''

''विचार की करब? जेना-जेना दीनाबाबू कहता तेना-तेना करब, सएह ने सुरेन्द्रबाबू बजला।''

हिसाब जोड़ैत दिनानाथबाबू बजला-

''राधामोहन लगा सात गोटे भेलौं। तहूमे अपना सभ तँ घरवारीए भेलौं असल पाहुन तँ राधामोहने भेला। भोजक नोतहारी सुरेन्द्रे भाय भेला, बँचलौं हम। हम दू-दिसिया बनि दुनू दिस सम्हारि देब। सएह ने।''

''एना झाँपल-तोपल नक्शा बनौने काज नै चलत, खोलि-खोलि सभ विचारकेँ जोड़ियाबए पड़त।''

''हँ-हँ, सएह तँ कहै छी। असल पाहुन माने भेल मिथिलाक राधामोहन। अहाँ मगाहे भेलौं हम भोजपुरीए तँए असल भनसीया भेली सुरेन्द्रबाबूक पत्नी- सुचिता भौजी। वएह ने खाजो खुऔथिन। बेसी होइ वा नै एक-एक पीस तँ हेबाके चाहिऐक।''

सुरेन्द्रबाबू समर्थन करैत बजला-

''बहुत बढ़ियाँ, आगू?''

''आगू यएह जे हमर परिवार विन्यास वस्तुक सूची बना नजरि रखती जे कोनो वस्तु कम बेसी तँ ने होइ छै।''

''बहुत बढ़ियाँ।''

''सुरेखा भौजी वारीक हेती। किएक तँ मन अछि किने, बरी पहिने परसा गेलै आ अदौरी पछाति तहीपर ने सुरेखा भौजी हँसि देने रहथिन। केतबो पी.एन. भाय डँटलखिन तैयो मुँह सापुट लेलकनि?''

''काजक निगरानी?''

''सेहो करब। पी.एन. भाय हेता, अपने वक्ता भेलिऐ हमरा सुनने नइ सुनने की, हेबे करतै।''

“एना किए, खिशिया कऽ बजलौं?”

“खिशिया कऽ कहाँ बजलौं। बजलौं ई जे नीक लागत मानि लेब नै नीक लागत नै मानब।”

चाह चलल। पाँचो गोटे गोल-मोल बैसला। राधामोहन दिस देखैत सुरेन्द्रबाबू बाजए लगला-

“बौआ, अहाँ नवतुरिया छी, अहीं सभ भविस छिऐ। कहलौं जे गाए पोसैक विचार होइए से नीक विचार अछि। मुदा एतबेसँ काज नै चलत। दुनियाँक आन-आन मुलूकमे सुनै छिऐ गाए-महिंसकेँ एते-दूधा होइ छै, ओते दूध होइ छै। सत् बात छै। मुदा ओइ सत्यक पाछू बहुतो कारण छै। ओकर जलवायु केहेन छै ओकर सालो भरिक मौसम केहेन होइ छै। अपना ऐठाम मोटा-मोटी तीन मौसमक सामना पशुपालककेँ करए पड़ै छन्हि। जाड़, गर्मी आ बरसातक। जाड़-गर्मी दुनू पशु लेल अहितकर अछि। ऐ अहितकरकेँ हितकर केना बनौल जाए मूल प्रश्न अछि। ओना केतबो कहल जाए जे दूधक धार बहै छल, मुदा...? दूध-दही जइ स्तरक भोज्य पदार्थ छी ओइ स्तरक समाज अखनि धरि नै बनि सकल अछि, मुदा एका-एक अचानक तँ हेबो नै करतै। तँए पढ़ल-बिनु पढ़ल किसान परिवार लेल नीक बेवसाय पशुपालन छी। अच्छा ई कहू जे परिवारमे खेत केते अछि?”

राधामोहन-

“ठीक-ठीक तँ नै बुझै छी मुदा अनदाजन तीन-चारि बीघा हएत।”

तीन-चारि बीघा सुनि सुरेन्द्रबाबूक मुँह बिजकि गेलनि। मनमे उठलनि जे जौं तीन-चारि बीघाक समुचित खेती कएल जाए तँ प्रर्याप्त अछि। मुदा खेतीओ करब तँ जटिल अछिए। तीन-चारि बीघा खेत पचास टुकड़ीमे बँटि सौंसे गाम छिड़ियाएल हएत। संयमित होइत पुछलखिन-

“सभ खेत एकरंगाहे अछि आकि भीन-भीन?”

सुरेन्द्रबाबूक प्रश्न राधामोहन नै बूझि सकल। नै बुझैक कारण भेल जे घरमे खतियान, दस्ताबेजसँ लऽ कऽ बन्दोवस्त रसीदक संग सभ खेतक मालगुजारीओक रसीद अछिए। कागजे ने असल पहिचान खेतक छी, तहूमे रैयती मालगुजारी छीहे, एकरंगाहे अछि। ब्रह्मोत्तर-शिवोत्तर रहैत तँ मालगुजारीक जगह शेषेटा लगैत। सेहो तँ नहियेँ अछि। राधामोहनक मन जमीनक गुत्थीक गिरह खोलिए ने पबै छल, जइसँ बाजबे की करैत। ओना तीनू गोटे बूझि गेला जे राधामोहन प्रश्न नीक जकाँ नै बुझलक। नै बुझैक कारण नहियोँ सुनब होइ छै से नै प्रश्नक गहराइकेँ नै छूबि सकल। सुरेन्द्रबाबू प्रश्न दोहराबए नै चाहथि, दोहरेबे की करितथि। वएह ने रामाकठोला। वएह बात वएह शब्द। दीनानाथबाबू बीचमे ऐ दुआरे नै टपकथि जे सुरेन्द्रबाबूक स्वाभावसँ परिचित। जँ कहीं रधेमोहन जकाँ भँसिआ जाएब तँ दोसर लग हमरा लेल थोड़े औत आ वएह लगा चला देता। तँए अनकर टेटर अपना सिर सहेजब नीक नै, तँए चुप। मुदा पी.एन.बाबू अपन मैदान देखि मुँह बन्न राखब उचित नै बूझि, बजला-

> “सुरेन्द्रबाबू, भरिसक राधामोहन भाषा भेदक चलैत प्रश्न नै बूझि सकल। बुझा दइ छिऐ।”

पी.एन.बाबूकेँ मनमे उठलनि। जेकरा हमसभ एक्के गाममे अमधुर कहै छिऐ ओकरे किछु गोटे अमरूद कहै छथि, मुदा मिथिलांचल तँ भिन्न अछि, जैठाम लताम कहल जाइ छै। मन मानि गेलनि जे भरिसक भाषे दोष छी। बजला-

> “अपना सभ समाजक प्रवुद्ध वर्ग छिऐ किने, जे पछुआएल जिनगीसँ पीड़ित अछि ओ किआँ ने गेल अगुआएल जिनगीक पद्धति। जौं से होएत तँ अल्लू घर-घर चलैए ओइ घरमे मिठाइओ तँ चलि सकै छल। किएक तँ तैंतीस-चौतीस रंगक जँ ओकर तरकारीओ होइ छै तँ ओइसँ बेसी पैंतीस रंगक मिठाइओ तँ होइते छै। मुदा जँ लाट साहैबक ऑफिसमे भाषेक दूरी बनल रहत तँ समस्याक समाधान सुलझत आकि आरो उलझत। एक तँ भाषाक दूरी दोसर भाषाक अपन शब्दक दूरी तँ अछिए।”

सह पाबि दीनानाथबाबू टिपलनि-

“हँ-हँ भाय साहैब अहाँक विचारसँ हम बिल्कुल सहमत छी जे एके तरकारीक नाओं क्षेत्रक कोन बात जे गामोमे भिन्न-भिन्न अछि। मिथिलांचलक घेरा झारखण्डमे नेनुआ आ परोड़ बनि जाइए तँ भोजपुरमे सोल्हनी नेनुआ बनि जाइए। तेतबे नै नेपालक राजविराज क्षेत्रमे झींगा नाओं रखने अछि।”

बैसार अनुकूल भेल। पी.एन.बाबू राधामोहनकेँ पुछलखिन-

“राधामोहन, सुरेन्द्रबाबूक प्रश्न बहुत नम्हर भऽ गेलनि, किएक तँ अपना ऐठाम एक-दोसर जमीनक दूरी बहुत अछि। केतौ वाड़ी-घराड़ीक मूल्य बेसी अछि तँ केतौ चर-चाँचरक कम। तहिना पानिक लाट अछि तँ केतौ बिनु पानिक। कोनोक माटि नीक अछि तँ कोनोक दोखरा बालु। तहिना केतौ ऊँचरस रहने रौदीक संभावना बेसी रहैत तँ केतौ दाहीक। दाहीक कारण खाली बाढ़िए नै बर्खा सेहो होइ छै। ऊपरका पानि नीचाँक फसलकेँ दहा दइ छै।”

महजाल जकाँ जलियाएल प्रश्न देखि सुरेन्द्रबाबू राधामोहनपर नजरि अँटकबैत बजला-

“राधामोहन, अखनि तँ अहाँकेँ माएओ आ बाबूओ जीविते छथि, हुनकासँ विचारि नेने छी। विचार लैक पहिल ई कारण जे जौं हुनक अनुकूल विचार छन्हि तँ काजमे सुविधा एहत। जौं प्रतिकूल विचार हेतनि तँ ओ ऐ काजसँ अवगति नै हेता जइसँ सुनाड़ी जिनगीक लाभ नै अनाड़ीक नोकसान हएत।”

अवसरि पाबि दीनानाथबाबू टिपलनि-

“जैठाम कोनो नव काज शुरू कएल जाइत अछि ओइठाम तँ सभ अनाड़ीए भेल किने?”

मुस्की दैत सुरेन्द्रबाबू बजला-

“औगताइमे कहि सकै छिऐ। मुदा से नै ऐठाम नव किस्मक

जर्सी गाएसँ पूर्वक देशी गाए तँ अछिए। दूधारू जानवर दुनू भेल। जिनगीक सभ आवश्यकता दुनूकेँ छै। मुदा ओकर खाढ़ बदलि गेलै जइसँ दूधक शक्ति बदलि गेल। तँए ओकरा ओइ अनुकूल केना बना कऽ राखल जाए से मूल भेल। मुदा एकरा लेल जरूरी अछि जे ओइ पाछू समए केतए लगै छै आ परिवारक लोकक समए केतए अछि तही हिसाबसँ ने नीक हएत।''

समैकेँ ससरैत देखि प्रश्नकेँ मोड़ैत सुरेन्द्रबाबू बजला-

''राधामोहन, जइ परिस्थितिमे अहाँ छी, अछैते पूजीए लल-बेकल छी। बहुत पूजी अछि। मुदा ओइ पूजीमे गति आनैले बहुत मेहनतिओ आ सुझिओ-बुझिक जरूरति अछि। जे अखनि अहाँ लेल कठिने नै भारीओ अछि।''

सुरेन्द्रबाबूक प्रश्न सुनि राधामोहन ओहन ठमकान नै ठमकल जे चारूकात अन्हराले बाट देखैत ओहन ठमकाएल जे चारूकात बाटे-बाट देखैत। एक्के गाछक कोन जड़ि छी आ कोन छीप परहक बड़क सीर, बिलगाएब कठिन अछि। मुदा बिनु बिलगौने काजो तँ नहियेँ चलत। बाजल-

''श्रीमान्, अखनि एते पसार देखा देब तँ ओकरा समेटि कऽ उसारब कठिन भऽ जाएत। तखनि एना कऽ जरूर देखा दिअ जे फेर केकरोसँ पुछैक जरूरति नै हुअए।''

राधामोहनक प्रश्न सुनि सुरेखा टिपलनि-

''बड़-बड़ धान खेलैँ रे बगड़ा ऐबेर पड़लौं मरदसँ रगड़ा।''

महावीरजी जकाँ एकटा जड़ि नै पहाड़े उठा कऽ आनए पड़त। सुरेखाक चपचपी देखि सुरेन्द्रबाबू गंभीर होइत चपचाइत बजला-

''राधामोहन, अखनि अहाँक जिनगी लटकल भँट्टा जकाँ झुलैए। तँए निश्तुकी काज लेल निश्चित समए चाही, से नै देखै छी। कहै छी जे पिता अब-तबक स्थितिमे छथि। अहाँ गाए खुट्टापर

बान्हि लेब हुनका असपताल लऽ जाइक जरूरति हएत की करबै। समैपर गाएकेँ खाइ-पीबैले नै देबै तँ दुरि भऽ जाएत आकि दुरूस रहत।''

राधामोहन-

''तखनि?''

सुरेन्द्रबाबू-

''तैयो बहुत संभव अछि।''

राधामोहन-

''किछु-किछुक चर्च कऽ दियौ। जे सूटगर हएत ओइठामसँ जिनगीक क्रिया शुरू करब।''

प्रश्नक गंभीरता अँकैत पी.एन.बाबू मुँह बिजका मुड़ी डोलबए लगला। मुदा अपनाकेँ पूरक प्रश्नकर्ता बनब नीक बुझलनि। अपने-आपकेँ अपना नजरिए देखब आ अनका नजरिए देखैमे किछु-ने-किछु अंतर तँ आबिए जाइ छै, तँए नीक हएत जे दुनू नजरिक समावेशी दिशा होइ। तँए नीक हएत जे सुरेन्द्रबाबूक सोच-विचार आ अपन सोचमे की अन्तर भऽ रहल अछि। तैसंग राधामोहनकेँ दुनूमे की अनुकूल बनि पड़त। मनमे अबिते ठोरक केबाड़क बिलैया ठोकि कान ठाढ़ केलनि। कान ठाढ़ करब ऐ लेल जरूरी बूझि पड़लनि जे एहेन ने हुअए जे मूलेमे मन किम्हरो भसैक जाए। राधामोहनकेँ हजारो प्रश्न उठबैक अधिकार छै, अनसुनीओसँ काज चलि सकै छै, मुदा हमरा सेने से तँ नै हएत। एक तँ घरवारी छी, दोसर अपना क्षेत्रक प्रश्न छी, तेसर किछु हेतै तँ राधामोहन उपरागे किनका देतनि। नमहर गोष्ठीक अध्यक्षता जकाँ भारी तँ बूझि पड़लनि मुदा दोसर तँ जवाबदेहो नहियेँ छथि, जिनका सुमझा सकै छियनि। मुदा..., खैर जे होउ।

दीनानाथ मने-मन सोचथि जे जे शोध सुरेन्द्रेबाबूक अन्दरमे कऽ रहल छी, ओही प्रश्नक उत्तर श्रीमुखसँ सुनब। अवसरि भेटल। जौं साकांछ भऽ नै सुनि-बूझि लेब तँ पछाति अपने भारी हएत। सुरेखा लेल

धनिसन। मरदा-मरदी गप छी, अनेरे बीचमे पड़ब मगजमारी हएत। मुदा लगले मन बदलि अपन प्रश्नपर पहुँच गेलनि। 'हमरा गामसँ अहाँक गाम नीक अछि।' के कहने छला। संगे-संग जवाब देब। आब कहू जे सतंजामे एकटाकेँ बेड़ाएब केहेन हएत। जौं आँखि निराड़ि कऽ नै ताकब तँ भेटत केना।

तही बीच सुरेन्द्रोबाबूक पत्नी आ दीनानाथोबाबूक पत्नी आबि बैसली। मौका पाबि दीनानाथबाबू पी.एन.बाबूकेँ पुछलखिन-

> ''भाय यौ, तिलासंक्रान्तिमे एकटा तिल खेने तँ बेटा-बेटी जिनगीक मोटा उठा लइए आ सुरेन्द्र भाइक बनौल तिलकूट जे सालो भरि लोक पनपिआइ करैए से की हेतै।''

सुरेन्द्रबाबू तँ चुपे रहला मुदा हुनक पत्नी सेहो ओम्हुरके। तँए वएह नैहरक पक्ष लैत बजली-

> ''से तँ बुझिते हेबै।''

समैकेँ अनेरे बोहैत देखि राधामोहनकेँ सुरेन्द्रबाबू कहलखिन-

> ''बौआ, अखनि अहाँ बालबोध छी, जिनगीक धक्का-पंजासँ भेँट नै भेल अछि। अपने उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाएब धिया-पुताक खेल नै छी, तँए छोड़िओ देब उचित नै। अहाँ अपन दिशाहीन परिवारकेँ दिशा दऽ सकै छिऐ, मुदा ओहूमे कठिनाइक सामना करए पड़त। वैचारिक दौड़मे पहिल संघर्ष समाजमे होइ छै। जखने आगू दिस बढ़ए चाहब तखने रूढ़िवादी विचार, जे समाजक कोढ़ रहल अछि, अपन सोल्हन्नी शक्तिसँ विरोध करैए। मुदा तेकर चिन्ता नै। जहिना सूरसाक मुहसँ हनुमान सुरक्षित निकलि आगू बढ़ि गेला तहिना टपान अछि, टपि जाएब। जाबे धरि कोनो परिवारक आमदनी-खर्चासँ कम रहतै ताबे धरि ओ परिवार पाछू मुहेँ ढरकबे करत। अहाँ तँ सहजे त्रिकाल, काँच अवस्था, पुरुष विहिन परिवार आ परिवारमे ओहन रोगी जे मृत्युक करीब पहुँच गेल अछि, मे पड़ल छी। तँए अपन खेनाइक संग घोड़ाक दानो आ मोछमे तेल लगा सवारीओ

करैक छह।''

बीचमे सुरेन्द्रबाबूकेँ पी.एन.बाबू टोकलनि-

''हरि अनंत हरि कथा अनंता अछि। ओते वृहतमे एकाएक जाएब नीक नै। नमहर-सँ-नमहर गाछक बीआ कनीओ माटिमे रोपि कऽ जनमौल जाइ छै।''

पी.एन.बाबूक इशारा पाबि सुरेन्द्रबाबू घोड़ाक मुखाड़ी खींच बजला-

''राधामोहन, किसानी परिवारमे जनम भेल अछि तँए किसानी जिनगीकेँ कनीए बूझि लिअ। अहाँक प्रश्न भारी नै अछि। खण्डीओ करि कऽ सोझराइए देब।''

सोझराएब सुनि राधामोहनक मनमे खुशी उपकल। सुरेखा समैकेँ गमौने बिना सुरेन्द्रबाबूपर आँखि फेकलनि। सुरेन्द्रबाबू बूझि गेलखिन जे भरिसक अपन प्रश्न मन पाड़ि रहली अछि। भने नीक हएत जे पहिने हुनके उत्तर दऽ दियनि। बजला-

''देखियौ, राधामोहन बजला जे हमरा गामसँ अहाँक गाम नीक अछि। मुदा बाल-बोध अछि औगताइमे बाजि गेल। सभ गाम कुकुर-कटौझमे लगल अछि। खेबो करैए आ भूकबो करैए।''

विचारक रस पाबि दीनानाथबाबू मुँह चटपटबैत पुछलखिन-

''से की से की, भाय कनी फड़िछा दियौ।''

मुस्की दैत सुरेन्द्रबाबू बजला-

''सभ सभकेँ गरियेबो करैए आ मुँह मिलानीओ रखने अछि। कियो बजैत जे असकर बरसपतिओ फूसि तँ कियो बजैत दिन-राति आत्मा रामक तीमन खा आ चिड़ैसँ बाँतर कहि विवेकबान बाबू बनह। खैर जे होउ। खेती-वाड़ीक उपजासँ अहाँ (सुरेखा) गौआँ कोठो-कोठी बनौलनि आ खेबो-पीबो नीक करै छथि, तइ खियालसँ राधामोहन बाजल। मुदा पढ़ल-लिखल लोक राधामोहनक गाममे बेसी अछि। तँए के नीक के बेजाए, कहब

कठिन अछि। राधामोहन आगू बाजू?''

राधामोहन-

''दबाइओ किनैमे आ दूधो उठौना लइमे तंग-तंग भऽ गेल छी, तँए गाए पोसैक विचार मनमे आएल।''

राधामोहनक प्रश्न सुनि सुरेन्द्रबाबूक मनमे भेलनि जे राधामोहनकेँ ओकर सम्पतिकेँ बिना जनौने कारोबार जनाएब नीक नै। बजला-

''देखियौ, जे पूजी (खेत) अछि ओकरा समुचित बेवस्था केने अहाँ नीक गिरहस्त बनि सकै छी। पूजी दू रंगक अछि, एक श्रम आ दोसर धन। दुनूक मिश्रित दिशा जिनगीक बाट भेल। गिरहस्तीक बहुतो डारि छै। तइमे गाएओ पोसब एकटा अछि। मुदा जखनि अपन सम्पतिक असल रूप हनुमान जकाँ बूझब तखने ने नमहर छलांग लगाएब। बड़बढ़ियाँ। केतेक गाए पोसैक विचार अछि?''

राधामोहन-

''मन तँ अछि जीविका बनबैक मुदा अखनि से पार लागत। तँए एकेटा पोसैक विचार अछि।''

सुरेन्द्रबाबू-

''बड़ बढ़ियाँ, सभसँ पहिने ओकर खेनाइ-पीनाइक जोगार कऽ लिअ। कोनो दूधारू घास एक माससँ पहिने नै उपजा सकै छी, तँए गाम जा कऽ पहिने घासक खेती कऽ लिअ। खेती केला पछाति रखैक जोगार, घर आ थैरक सेहो कऽ लेब। अखनि अकसरहाँ किसान अगबे एसबेस्ट्सक घर बनौने छथि। से नै, बरसात लेल एसबेस्ट्स नीक अछि मुदा जाड़ो आ गर्मीओ लेल उपयुक्त नै अछि। ओकरा तरमे मोटगर कऽ छाड़ दऽ देलासँ उपयुक्त बनि जाइ छै। ई दुनू काज केने आउ, तखनि ऐठाम-पूसासँ एकटा दुधारू गाए कीनि संगे चलब आ दूधक पहिल भोज खाएब।''

पी.एन.बाबू राधामोहनकँ कहलखिन-

"साल पछाति तँ हमहूँ गामे अबै छी। जौं चारिओ-पाँच गामक लोक गाए पोसलनि तँ ओते दूरक बीच जिनगीओ बनले रहत।"

❍❍

५

समए पाबि राधामोहन पूसा मेला तँ चलि गेल मुदा परिवारमे बिनु कहने। आने मेला जकाँ टटके दर्शन कऽ घूमि जाएब, मनमे रहै से गड़बड़ा गेलै। पाँच दिन समए लगने बुधनीकेँ अन्देशा हुअ लगलनि। जे कहीं छौड़ा बौर-तौर तँ ने गेल। नव कवरिया अछि हो-हामे ने केतौ पड़ि गेल। मुदा पिता-नन्दलाल छाती लगा मारि लेलनि जे जहिना दुनियाँक सभ किछु छुटिए रहल अछि तहिना बेटो गेल। मुर्दापर जेहने अस्सी मन लाद तेहने नब्बे मन, ओरो की।

हहाएल-फुहाएल राधामोहनकेँ अबिते देखि यशोदा मैया जकाँ बुधनीक छाती सूप जकाँ भऽ गेलनि। काजक भूखल-पिआसल चेहरा देखि बुधनी बजली-

> "बौआ, थाकल-ठेहियाएल एलह-हेँ, किछु पानि पीब लैह।"

माएक बात सुनि राधामोहनक मन ओइ यात्री सन भऽ गेल जे छहराइ लेल आमक गाछक निच्चाँमे बैसैए आ तखने पाकल धब दऽ आगूमे खसै छै। उत्साहित मने राधामोहन बाजल-

> "माए, भने कनी जिराइओ लेब आ मेलोक गप-सप्प सुना देबौ।"

जहिना कोनो परिवारक हराएल बच्चा हाथमे किछु नेने अबैत जेकरा देखि माए-बापक मन खुशी होइत तहिना दुनू बेकती बुधनी आ नन्दलालोकेँ भेलनि।

पानि पीब राधामोहन बाजल-

> "माए, जहिना कियो मनकामना नेने देवस्थान पहुँचैए तहिना भेल।"

तड़सैत मनमे जहिना तृष्णा तड़पैत तहिना माएक तड़सैत मनपर राधामोहन आँखि गड़ा देखए लगल। जिज्ञासु मन माएक। बेटाकेँ अपन तृष्णा केना कहत। केकरा नै मन होइ छै जे नीक खेनाइ खाइ, नीक शरीर लऽ कऽ नीक घरमे रही। प्रतिकूल मौसमकेँ अनुकूल बना शान्तसँ

निवास करी। मुदा माएक बात जौं बेटा बुते नै पुरौल भेल तँ ओकरो मन कानि-कानि बाजत जे माएक मन लगलै रहि गेलनि। तइसँ नीक जे ओकरे सुनब हएत। बजली-

"की सभ मेलामे देखलहक?"

मेला सुनि राधामोहन विस्मित हुअ लगल। दहिना हाथ उठा चानि ठोकि बाजल-

"माए, एक जिनगीकेँ के कहए जे पुश्त-पुश्तैनीक जिनगीक बाट भेट गेल। भगवान दहिन भेला, जे मेलाक जड़िएमे पहुँच गेलौं। तेहेन-तेहेन विचारक सभसँ दोस्तीआरे भऽ गेल जे गुरु मानि लेलियनि। केतौ हमरा बौआइ-ढहनाइक जरूरति नै अछि। जखनि जे जरूरत हएत एक लपकन चलि जाएब आ सीख लेब। जइ हिसाबसँ कहलनि तही हिसावसँ काजो करब। एकेटा गाए पोसब। बेसी नै सम्हारल हएत। मुदा एकोटा पोसब तँ तीन के कहए जे तेरहक मुकाबला करत।"

बेटाक उत्साह देखि बुधनीक मन उत्साहसँ धधकि गेलनि। जहिना केतौ कोनो घरमे आगि लगने भुकार फुटैत तहिना माएक मन देखि राधामोहन बाजल-

"माए, अपना सभ बुझै छी जे गरीब छी कोनो आए-उपाए नइए, मुदा से नै तेते अछि जे सम्हारले ने हएत। हाथमे रूपैआ नै अछि खेत-पथार तँ अछि। ओना खेतो तेतेक अछि जे नीक जकाँ गिरहस्तो बनि सकै छी, मुदा जखनि मनमे जिनगीक पहिल काज गाइए पोसब जागल तँ यएह करब। सीमा कातक जे खेत अछि, दुनू गामक लोक हगनार बनौने अछि ओइ बारहो कट्ठाकेँ बेचि लेब। दस हजार रूपैए ओइ बाधक जमीनक दाम छै। हगनार बूझि पाँच-दस हजार कमे दिअए मुदा बेचब ओकरे। ओइसँ एको कनमा उबजा नै अबैए।"

राधामोहन बजिते छल कि बिच्चेमे नन्दलाल ओछाइनिएपर सँ बाजल-

''बौआ, खतियानी चीज छी तँए पहिने बन्दोबस्ती, दस्ताबेजी बेची। लोक की कहतह?''

राधामोहन चुप्पे रहल मुदा पत्नी झपटि बजली-

''दिनोमे तरेगन देखै छी से होशे ने अछि आ बेटा जे किछु करए चाहैए तँ आगूसँ ठेहुन गरा दियौ। ओकर सभ किछु छिऐ, राखए आकि बोहाबए, तेकर नीक बेजाए ओकरे हेतै। अन्न बिना मरब आकि भीख मांगि खाएब, कौल्हुका दिन लोक ओकरे ने थूक देतै। तइले हम किए रोकब।''

बेटा दिस मुँह ताकि बुधनी पुन: पुछलक-

''हँ, और की करबहक?''

दूमे एकक सह पाबि राधामोहन बाजल-

''दस कट्ठा खेतमे दूधारू घास लगाएब। अपना बोरिंग नै अछि, एकटा कले खेतमे गड़ा देबै आ छोटके इंजिन लऽ लेब। ओना अखनि एक्केटा गाए आनब तँए एके गाए जोकर घरक काज अछि मुदा से नै करब, तेना कऽ बानाएब जे तीन-चारिटा गाएक अँटाबेस भऽ जाएत। अखनि ताबे गहुमक भूसी कीनि कऽ राखि लेब।''

मास दिन बीतैत-बीतैत घरो बना लेलक आ बीत-बीत भरिक दूधारू घासो उपजा लेलक। पचास हजार रूपैआ हाथमे बँचलै रहै पूसा विदा भेल।

चिन्हरबे लोक चिन्हरबे घर-दुआर साढ़े पाँच बजे साँझमे राधामोहन पी.एन.बाबूक डेरापर पहुँचल। दुनू बेकती बजार गेल रहथि। तैबीच बगले डेरासँ सुरेन्द्रबाबूक पत्नी देखिते पूछि देलखिन-

''गाम-घरक की हाल-चाल अछि राधामोहन?''

राधामोहन-

''सभ आनन्दित अछि। साहैब सभकेँ नै देखै छियनि?''

राधामोहनक बात सुनि सुचिता बजली-

''साहैब सभ सहाएबे छथि किने, रौद-बसात लगबैक समए भऽ गेल अछि किने, किम्हरो रौद-बसात लगबए गेल हेता।''

दुनू गोटेक बीच गप-सप्प चलिते छल कि दुनू बेकती रक्का-टोकी करैत पी.एन.बाबू पहुँचला। रक्का-टोकीक कारण रहै राति लेल माछ किनब। चसगर खेनिहार पी.एन.बाबू तँए माछपर जोर देने। एक तँ माछक अड़सट्टा तेहेन भारी अछि जे खाइ-बेर तक अड़सट्टा लगौने रहैए, तइसँ नीक अपन गाएक दूध किए ने। कोनो बसी तरएदूत नै। माछक छातीपर बैसैक दम ओकरा नै छै। तखनि तँ वेचारा ओहुना कहू जे दू गोरेक भानसमे जौं चारि घंटा समए लगाएब केहेन हएत। दूधकेँ की छै, बथनियाँ जकाँ दूहि कऽ चुल्हिओपर कटिए चढ़ा देबै आ गरमे-गरम खाइ बेर थारीमे उझिल देब। एक संगे दुनू काज कटियो सोन्हा गेल आ दूधो औँटा गेल। ओना माछ कीनिए नेने रहथि। राधामोहनकेँ देखतै पी.एन.बाबू पुछलखिन-

''गाम-घरक की हाल चाल अछि राधामोहन?''

''बड़बढ़ियाँ अछि। जहिना-जहिना कहने रही तहिना-तहिना करबो केलौं।''

राधामोहनक जवाब सुनि पी.एन.बाबूक मन फुला गेलनि। बजला-

''अहू ठामक जात्रा नीके अछि, माछ अनलौं-हें।''

बजैकाल तँ बाजि गेला मुदा लगलै मन रोकि कऽ अँटका देलकनि। रोकि देलकनि जे माछ खाइ छथि तिनका लेल ने, जे नै खाइ छथि तिनका लेल जत्रा भेलै? तैसंग ईहो ने भोज्य पदार्थक तुलनामे माछ महगो अछि, जेतए सस्ता वस्तु भेटब भारी अछि तैठाम की कहल जाए। खैर जे होउ, मिथिलाक पहिचान तँ छीहे। भलहिं पोखरि बाढ़िमे मरने भऽ गेल हुअए, गढ़िया गेल हुअए, खरहा गेल हुअए आकि भोँथिया गेल हुअए, मुदा झंडा झुकाएब नीक हएत। झुकबाको नै चाही। से जँ झूकि गेल तँ की एहेन देह-दशा लऽ कऽ मुरै उखाड़ब।

विचारमे पी.एन.बाबू मगने रहथि आकि तखने सुरेन्द्रो आ दीनानाथोबाबू ललका-ललकी करैत पहुँचला। ओना ठोर दुनूक पटपटाइते रहनि मुदा राधामोहनक सोझहामे अपन उलझन राखब नीक नै बुझलनि। पाशा बदलैत दीनानाथबाबू राधामोहनकेँ टोकलखिन-

> "बड़ चपचपी देखै छी राधामोहन। इन्दिरा आवासक पाइ गाए किनैले भेटल आकि दारू भट्ठी जाइले। से भाँज कनी कहू।"

सुरेन्द्रबाबू आ दीनानाथबाबूक बीच जे ललका-ललकी रहनि ओ ई रहनि जे जौं दूधक पैदावार गाममे बढ़ि जाएत तँ ओकर बजार केहेन हएत? नीक प्रश्न रहितो दुनू गोटे ओझरा ओतए गेल रहथि जे बजार केना बनै छै।

दिन उगले सभ एकठाम बैसला। तैबीच सुरेखा माछकेँ धो-धा तेलमे कर लगा नेने छेली। संयमित सोच रहने कियो अपन रमाकठोला नै पसारि राधामोहनेक बात सुनैले खढ़िया जकाँ कान ठाढ़ केने रहथि। से जौं नै करतथि तँ नढ़ियो तँ नहियेँ छथि जे सोझहे भुकबे करितथि। पुछतनि कोइ ने। अपन जिनगीक मांसक रक्छा तँ वेचारा खढ़ियोकेँ अपने करए पड़ै छै, नै तँ जेकरे आँखिक सोझ पड़त मारि कऽ खा जेतै।

जहिना किछु लोक एहनो होइ छै जे मुदालह बनि लड़बकेँ प्रतिष्ठा आ मुद्दैकेँ अप्रतिष्ठा बुझै छथि, कारण जे होउ...। तहिना काज पुरौल राधामोहनक मन प्रश्न सुनैक जिज्ञासा लेल उत्तर मनमे रखने तँए फुलैत जे किछु पुछता तँ प्रश्नक नीक उत्तर देबनि। बिच्चेमे सुरेखा टपकली-

> "दूध नीक आकि माछ?"

दीनानाथकेँ भेलनि जे चिकारीमे भरिसक हमरे कहलथि, किएक तँ हुनका दुनू गोटेसँ तँ धकाइते छथि। अवसरक चुकल बाण जहिना सौंसे दुनियाँ बौआ-ढहना अबैए तहिना बूझि पड़ैए जे हएत। हमहीं बुझलिऐ आ ओ सभ नै बुझलनि, की ओ सभ अन्न नै खाइ छथि जे नै बुझने हेता। सुरेखाक आँखि-पर-आँखि दऽ दीनानाथ उत्तर देलखिन-

> "जे भेटए से नीक।"

अनेरे समैकेँ ससरैत देखि सुरेन्द्रबाबू राधामोहनकेँ पुछलखिन-

''की सभ अखनि धरि केलौं?''

जहिना कोनो विद्यार्थी रातिमे कोनो कविता वा गीत रटलक आ भिनसुरका परीक्षाक प्रश्न पबिते अह्लादित भऽ कागतपर उतारि दइ छै तहिना राधामोहन बाजल-

> ''श्रीमान्, एक लाख दस हजार रूपैआमे खेत बेचलौं। सबा क्वीन्टल मासक हिसाबसँ पाँच क्वीन्टल गहुमक भूसी कीनि लेलौं। दस कट्ठामे घास लगौने छी, चारि थान रहैबला घर बनेलौं। पचास हजार बँचल अछि जे लऽ कऽ अपने लोकनिक सरणमे आएल छी।''

राधामोहनक जवाब सुनि, जहिना कोनो देवालयमे गेट परहक हनुमानजी सभसँ पहिने असीरवाद दइ छथिन तहिना दीनानाथबाबू सुरेन्द्रबाबूकेँ कहलखिन-

''भाय साहैब, अपनेबला गाए दऽ दियौ।''

दीनानाथबाबूक विचार सुनि सुरेन्द्रबाबू ठमकि गेला। ठमकैक कारण छेलनि एक संग अनेको प्रश्न मनमे उठब। अपना खुट्टा परहक गाए छी, बच्चेसँ देखैत एलौं। अखनि गाए अछि। पनरह किलो दूध होइ छै। की सभ खाइले दइ छिऐ आ केतेक बेर पानि पीआबै छिऐ, केहेन घर बना रखने छिऐ। सभ तँ बूझल-गमल अछि। जौं गाए देबै तँ तैसंग ईहो सभ कहि देब नीक हएत। मुदा दोसर प्रश्न उठि गेलनि जे लाख रूपैआ दरमाहा उठबै छी, एकटा बोनाएल नवयुवककेँ उठैले तीस-चालीस हजार नै दऽ सकै छी। गाएक दाम नै लेब। मुदा तइ बिच्चेमे दीनानाथबाबू दाम खोलैत बजला-

''तीस हजार गाइयक दाम भेल, गाड़ी भाड़ा अपने लागत।''

दीनानाथबाबूक विचारकेँ समर्थन करैत सुरेखा टिपलनि-

''हँ-हँ, दाम ठीके कहलिऐ। तइमे आसीक जे देथिन।''

दुनूक गप सुनि सुरेन्द्रबाबू बजला-

"गाएक दाम नै लेब।"

मंगनी सुनि राधामोहन चौंकैत बाजल-

"श्रीमान्, जहिना मंगनी किताब पढ़ने लाभ होइ छै तहिना मंगनी बौसौक होइ छै, तँए मंगनी नै लेब।"

राधामोहनक प्रश्नसँ आरो सुरेन्द्रबाबू उलझि गेला। मनमे उठलनि एक तँ जीवनी-सँ-अनाड़ीक हाथ बौस जा रहल अछि। काँच बौस भेल। जौं कहीं दस-बीस दिनक बीच किछु भैए जाइ। गामे-घर छी साँपो-कीड़ा रहिते अछि तखनि तँ ओइ वेचाराकेँ की दशा हेतै। मुदा मंगनीओ नै लिअ चाहैए। दाम कम करि कऽ दिऐ, सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। काल्हि-दिन जखनि बेचए चाहत तँ लेबाल कहबै करतै ने जे एतबेमे किनने रहअ। बजला-

"दाम दीनेबाबूक भेलनि मुदा छह मास धरि पाइ अपने हाथ राखू, केते तरहक बेर-वेगरता हएत। जखनि अहीं सबहक इलाकाकेँ अपन जीबैक इलाका बना रहल छथि, तखनि भाय-बंधु सिरजि किए ने पावनिओ-तिहार गामे-घर मनाबी।"

दोसर दिन गाएक संग सुरेन्द्रोबाबू आ दीनानाथोबाबू राधामोहनक ऐठाम आबि सभ किछु देखि-सुनि पायस पारस पाबि चारि बजेक बस पकड़ि लेलनि।

❍❍